भारतीय इतिहास

I. प्राचीन भारतीय इतिहास

भारतीय इतिहास के प्राचीन काल को सामान्यतया तीन कालखण्डों में विभाजित किया जाता है—(1) प्रागैतिहासिक काल, (2) आद्य ऐतिहासिक काल एवं (3) पूर्ण ऐतिहासिक काल। प्रागैतिहासिक काल के अंतर्गत सामान्यतया पाषाण संस्कृतियों को रखा जाता है एवं आद्य ऐतिहासिक काल के अंतर्गत सैंधव सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) और ऋग्वैदिक सभ्यता को रखा जाता है। पूर्ण ऐतिहासिक काल का आरंभ मौर्य काल से माना जाता है।

प्राचीन भारत के इतिहास को अध्ययन की दृष्टि से निम्न भागों में बांटा गया है—✸ पुरातत्व और प्रागैतिहासिक काल ✸ सिन्धु घाटी की सभ्यता ✸ वैदिक संस्कृति ✸ संगम काल ✸ प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन ✸ मौर्य साम्राज्य ✸ मौर्योत्तर काल (शुंग वंश, भारत पर विदेशी आक्रमण, पहलव वंश एवं कुषाण वंश) ✸ गुप्तकाल ✸ गुप्तोत्तर काल ✸ राजपूत काल (भारतीय उपमहाद्वीप पर अरबों का आक्रमण और भारत पर तुर्क आक्रमण)।

1. पुरातत्व और प्रागैतिहासिक काल

प्रागैतिहासिक काल (Pre-History Age) को मानव सभ्यता की दृष्टि से सबसे आरंभिक काल माना जाता है। मानव जाति के इस आरंभिक काल के इतिहास का अध्ययन करने हेतु उपलब्ध सामग्री के आधार पर तीन मुख्य भागों—(1) पुरा पाषाण काल (Palaeolithic Age), (2) मध्य पाषाण काल (Mesolithic Age) तथा (3) नव पाषाण काल (Neolithic Age) में विभाजित किया गया है। नव पाषाण काल के अंतिम चरण में धातुओं (मानव द्वारा सर्वप्रथम जिस धातु का प्रयोग किया गया वह तांबा ही था) का प्रयोग प्रारंभ हो गया, जिस समय मानव ने पत्थर के साथ-साथ तांबे के औजारों का उपयोग प्रारंभ किया, इसको ताम्र-प्रस्तर (''कैल्कोलिथिक'' अर्थात् पत्थर व तांबे के उपयोग वाली अवस्था) काल कहते हैं।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में 'पुरातत्व और प्रागैतिहासिक काल''

- ''कैलिग्राफी'' किसे कहते हैं? —**सुलेखन को (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-सी) परीक्षा, 1999)**
- पुरालेख विद्या का क्या अभिप्राय है? —**शिलालेख का अध्ययन (C.P.O. परीक्षा, 2003)**
- प्रस्तर युग के लोगों के पास कौन सा घरेलू पशु थे? —**कुत्ता (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-सी) परीक्षा, 1998)**
- मानव अस्तित्व का प्रारम्भिक काल क्या था?—**पुरा पाषाण काल (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)**

विशिष्ट तथ्य ''प्रागैतिहासिक काल''

- प्रागैतिहासिक काल की सभ्यता का उदभव एवं विकास ''प्रतिनूतन काल'' या ''प्लाइस्टोसीन एज'' में हुआ।
- पुरातत्व अवशेषों के तिथि निर्धारण तथा सभ्यता के विविध पहलुओं का अध्ययन करने विविध विद्वानों द्वारा कई विधियां अपनाई गई हैं, कुछ विशेष एवं वैज्ञानिक विधियों का वर्णन इस प्रकार है—
  1. **फ्लोरीन परीक्षण विधि** के द्वारा तिथि का निर्धारण किया जाता है। इस विधि में जो हड्डी या दांत जितना पुराना होगा उसमें उतना ही अधिक फ्लोरीन की मात्रा होगी। इसका प्रयोग सर्वप्रथम **ओकले** ने किया।
  2. **वृक्ष वलय निर्धारण विधि** की खोज **डगलस** ने किया। इस विधि के अंतर्गत वलयों की संख्या के आधार पर 3000 वर्ष पहले तक के कालक्रम को ज्ञात किया जाता है।
  3. **रेडियो कार्बन विधि** की खोज लिब्बी महोदय ने किया। इसके अंतर्गत C14 के द्वारा पदार्थ की मात्रा के विघटन के आधार पर ज्ञात किया जाता है। अगर पदार्थ 50 प्रतिशत विघटित हुआ है, तो इतने विघटन में 5568 वर्ष का समय लगेगा।
- मुद्राशास्त्र को न्यूमिस्मेटिक्स कहते हैं, इसके अंतर्गत सिक्कों का वर्णन करते हैं।
- पुरालेखशास्त्र को एपिग्राफी कहते हैं, इसके अंतर्गत अभिलेखों (शिलालेख) का अध्ययन करते हैं।
- पुरालिपिशास्त्र को पेलियग्राफी कहते हैं इसके अंतर्गत प्राचीन लिपि का अध्ययन किया जाता है।
- सुलेखन को कैलिग्राफी कहते हैं। सुंदर हस्तलेख (सुलेखन) के लिए मुहम्मद बिन तुगलक इतिहास में प्रसिद्ध है।
- निम्न पुरापाषाण काल के प्रमुख स्थल—कश्मीर, बेलन घाटी के अन्तर्गत मिर्जापुर (यू.पी.), भीमबेटका (मध्य प्रदेश)।
- भारत में पाषाण कालीन सभ्यता का अनुसंधान सर्वप्रथम 1863 ई. में प्रारंभ हुआ।
- दक्षिण भारत से हैण्डएक्स परम्परा के उपकरण सर्वप्रथम मद्रास के पल्लावरम् नामक स्थान से राबर्ट ब्रुस फुट ने 1863 में प्राप्त किया।
- मध्यपुरा पाषाण काल में पत्थर के गोले से वस्तुओं का निर्माण होने लगा।
- मध्यपुरा पाषाण काल के मुख्य स्थल—मिर्जापुर (यू.पी.), नेवासा (महाराष्ट्र), ओडिशा आदि।
- मध्यपुरा पाषाण काल को 'फलक संस्कृति' (Flake Culture) भी कहा जाता है।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- उच्च पुरा पाषाण काल सबसे पुरानी चित्रकारी के प्रमाण (भीमबेटका) इसी काल के हैं। पत्थर के ब्लेडों से उपकरण बनने लगे।
- इस काल के प्रमुख स्थल हैं—बीजापुर, इनाम गाँव (महाराष्ट्र), बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश)।
- आधुनिक प्रकार के मानव का विकास इसी काल में हुआ।
- मध्य पाषाण काल प्रमुख स्थल हैं—लंघनाज (गुजरात), आदमगढ़ (म. प्र.), बागोर (राजस्थान) आदि।
- मध्य पाषाण काल आदमगढ़ व बागोर से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- नव पाषाणकाल स्थल 'कोल्डी हवा (उ. प्र.) से विश्व में चावल उत्पादन का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त (6000 ई. पू.) हुआ है।
- कृषि का सर्वप्रथम साक्ष्य मेहरगढ़ से प्राप्त होता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं **—मेहरगढ़ से (5000 ई. पू.)**
- किस मध्य पाषाणिक स्थल से पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं **—सराय नाहर राय**
- भीमबेटका प्रसिद्ध है **—गुफा शैल चित्र के लिए**

2. सिन्धु घाटी की सभ्यता

सैंधव सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता, सिन्धु सभ्यता, सिन्धु-सरस्वती सभ्यता, कांस्य युगीन सभ्यता तथा प्रथम नगरीय क्रांति आदि संबोधनों से अभिहित किया जाता है। यह भारतीय सभ्यता व संस्कृति के लंबे वैविध्यपूर्ण कथानक का प्रारंभिक बिन्दु है। बीसवीं सदी के आरंभ तक इतिहासकारों एवं पुरातत्त्ववेत्ताओं (भारतीय पुरातत्व विभाग का जन्मदाता अलेक्जेंडर कनिंघम को माना जाता है, जबकि पुरातत्व विभाग की नींव वायसराय लॉर्ड कर्जन के काल में पड़ी) की यह धारणा थी कि वैदिक सभ्यता भारत की प्राचीनतम सभ्यता है। जब भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक जान मार्शल थे, तब दयाराम साहनी ने 1921 में ''हड़प्पा'' तथा राखाल दास बनर्जी ने 1922 में ''मोहनजोदड़ो'' नामक स्थलों से पुरातात्त्विक वस्तुओं को प्राप्त कर यह सिद्ध किया कि वैदिक सभ्यता से पूर्व भी भारत में एक अन्य सभ्यता (सैंधव सभ्यता) विद्यमान थी। सिन्धु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीनतम् सभ्यताओं (मिस्र, मेसोपोटामिया, सुमेर एवं क्रीट) के समय से ही विकसित थी।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''सिंधु घाटी की सभ्यता''

- हड़प्पा सभ्यता किससे संबंधित है?—**कांस्य युग (सीमा सुरक्षा बल (सब-इंस्पेक्टर्स) विशेष भर्ती, 1997)**
- गुजरात के किस स्थान पर हड़प्पा की सभ्यता के अवशेष मिले थे? **—लोथल (लोअर डिवीजन क्लर्क परीक्षा,, 1998)**
- भारत में आर्य सर्वप्रथम कहां आकर बसे? **—सिंधु घाटी (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-सी) 1999)**
- पैमानों की खोज ने यह सिद्ध कर दिया है कि सिंधु घाटी के लोग माप और तौल से परिचित थे। यह खोज कहां से प्राप्त हुई थी? **—हड़प्पा (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 1999)**
- हड़प्पा काल की मुद्राओं के निर्माण में मुख्य रूप से किस द्रव्य का उपयोग किया गया था? **—टेराकोटा (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2000)**
- सिंधु घाटी के घर किसके बनाए जाते थे? **—ईंट (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2001)**
- हड़प्पा के निवासी कैसे थे? **—शहरी (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2001)**
- सिंधु घाटी की सभ्यता के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या था? **—कृषि कार्य (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2001)**
- अपवाह तंत्र का निर्माण सबसे पहले किस सभ्यता के लोगों ने किया था? **—सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2002)**
- ईंटों की कृत्रिम गोदी (डॉकयार्ड) वाला एक मात्र सिंधु स्थल कौन सा था? **—लोथल (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2005)**
- लोथल नामक स्थान पर किस सभ्यता का जहाजी मालघाट था? **—सिंधु घाटी (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2006)**
- सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषता क्या है? **—व्यवस्थित शहरी जीवन (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2007)**
- सिंधु सभ्यता के लोग प्रायः अपने मकान बनाते थे? **—पक्की ईंटों से (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2008)**
- सिंधु सभ्यता के शहरों की गलियां कैसी थीं?—**चौड़ी और सीधी (C.P.O. परीक्षा, 2011)**
- सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषता क्या थी? **—नगर सभ्यता (F.C.I. असिस्टेंट परीक्षा, 2012)**
- धातु से बने सिक्के सबसे पहले प्रगट हुए?—**हड़प्पा सभ्यता से (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-सी व डी) परीक्षा, 2011)**
- सिंधु सभ्यता का बंदरगाह वाला नगर था **—लोथल (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-सी व डी) परीक्षा, 2011)**
- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग किस देवता की पूजा करते थे? **—पशुपति (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)**

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि कौन सी है?
—अज्ञात (चित्राक्षर लिपि)
(संयुक्त हायर सेकण्डरी (10+2) स्तर परीक्षा, 2013)
- विशाल स्नानागार स्थित था **—मोहनजोदड़ो**
(जूनियर इंजीनियरिंग परीक्षा, 2013)
- सिन्धु घाटी की खुदाई से प्राप्त वस्तुएं हैं
—नृत्य करती लड़की की आकृति
(प्रसार भारती इंजीनियरिंग परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य ''सिंधु घाटी की सभ्यता''

- सिंधु सभ्यता का काल—(a) पूर्व हड़प्पा काल (3500-2600 ई. पू.), (b) परिपक्व हड़प्पा (2600-1900 ई. पू.), (c) उत्तर हड़प्पा (1900-1300 ई.पू.)।
- सैन्धव सभ्यता का आकार-त्रिभुजाकार था।
- सैन्धव सभ्यता का कुल क्षेत्र 12,99,600 वर्ग किमी. था।
- हड़प्पा सभ्यता की अफगानिस्तान में दो बस्तियाँ मुण्डीगाक तथा सोर्तुगई प्राप्त होती हैं।
- रेडियोकार्बन C^{14} के अनुसार इस सभ्यता का काल 2350-1750 ई. पू. (सर्वमान्य तिथि) मानी गई है।

हड़प्पा : यह स्थल पाकिस्तान के पंजाब क्षेत्र के माण्टगोमरी जिले में रावी नदी के तट पर स्थित था।

- भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक सर जान मार्शल के निर्देश पर 1921 ई. में दयाराम साहनी ने इस पुरास्थल की खोज की।
- यह सैन्धव सभ्यता का दूसरा सबसे बड़ा स्थल है।
- यहां से श्रमिक आवास मिला है।
- यहां से स्वास्तिक चिह्न की प्राप्ति हुई है।
- मिट्टी का मूसा तथा अन्नागार भी प्राप्त हुआ है।
- **मोहनजोदड़ो** : मोहनजोदड़ो का सिन्धी भाषा में तात्पर्य है—मृतकों का टीला।
- मोहनजोदड़ो की खुदाई 1922 ई. में राखालदास बनर्जी ने कराई थी।
- पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के तट पर स्थित है।
- यहां से एक मुहर मिली है, जिसमें एक त्रिमुखी पुरुष को योग के पद्मासन मुद्रा में बैठा हुआ दिखाया गया है। इसे शिव का प्राचीन रूप माना गया है।
- यहां से विशाल स्नानागार का प्रमाण मिला है। इस स्नानागार के निर्माण में "T" प्रकार के ईंटों का उपयोग हुआ है।
- मोहनजोदड़ो से विशाल अन्नागार के प्रमाण प्राप्त हुए हैं (जो मोहनजोदड़ो के सभी भवनों में बड़ा है)।
- यहीं से सीप का पैमाना मिला है।
- सूती वस्त्र के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।
- **कालीबंगा** : कालीबंगा का तात्पर्य है—काले रंग की चूड़ियाँ।
- अवस्थिति—राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में।
- यहां घर कच्ची ईंटों के बने थे।
- चन्हूदड़ो में सैन्धव संस्कृति के बाद झूकर संस्कृति तथा झाँगर संस्कृति विकसित हुई।
- यहां से वक्राकार ईंटें मिली हैं।
- यहां से प्राप्त कांस्य की बैलगाड़ी व इक्कागाड़ी महत्त्वपूर्ण हैं।
- यहां मिली एक ईंट पर बिल्ली का पीछा करते कुत्ते के पैरों के निशान का साक्ष्य मिला है।
- **रंगपुर** : गुजरात के मादर नदी के तट पर स्थित था।
- रंगपुर व लोथल से धान की भूसी का साक्ष्य मिला है।
- यहां से कच्ची ईंटों का दुर्ग मिला है।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त पशुपति शिव की मुहर विशेष रूप से प्रसिद्ध है।
- सैन्धव सभ्यता में नारी मृणमूर्तियाँ ज्यादा पाई गई हैं।
- सैन्धववासियों के बर्तन मुख्यतः लाल या गुलाबी रंग के हैं।
- सिन्धु सभ्यता में संभवतः दास प्रथा का भी प्रचलन था।
- सैन्धववासी कपास के प्रथम प्रयोक्ता थे।
- सैन्धववासी पांसे का खेल व नृत्य द्वारा अपना मनोरंजन करते थे।
- सैन्धव सभ्यता के लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था।
- सैन्धव सभ्यता वैदिक आर्यों से पहले की तथा संभवतः आर्यों से भिन्न सभ्यता थी।
- यद्यपि सैन्धववासी घोड़े से अपरिचित थे (अनुमान) तथापि सुरकोटड़ा से घोड़े की हड्डियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- सैन्धववासी लिंग व मूर्तिपूजक थे, जबकि आर्य प्रकृति पूजक।
- मोहनजोदड़ो के अधिकांश निवासी भूमध्यसागरीय प्रजाति के माने जाते हैं।
- सैंधव सभ्यता के पतन का कारण अभी तक पर्याप्त साक्ष्य के अभाव में निश्चित नहीं किया जा सका है।
- विविध विद्वानों ने सैंधव सभ्यता के पतन के कारण निम्न बताए हैं—1. व्हीलर ने आर्यों का आक्रमण, 2. चाइल्ड व पीगट ने ब्रह्म आक्रमण, 3. आरेल स्टाइन व घोष ने जलवायु परिवर्तन तथा 4. लैम्बिक ने अस्थितर नदी तंत्र बताया है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- सैंधव सभ्यता के महान स्नानागार कहां से प्राप्त हुए हैं—
—मोहनजोदड़ो
- हड़प्पा संस्कृति पर प्रकाश डालता है—**पुरातात्विक खुदाई**
- मानव द्वारा सर्वप्रथम प्रयुक्त अनाज था **—जौ**
- सिंधु घाटी सभ्यता का पत्तन नगर था **—लोथल**
- सिंधु सभ्यता किस काल में पड़ता है **—आदि ऐतिहासिक काल**
- सिंधु घाटी के लोग विश्वास करते थे **—मातृशक्ति में**
- सिंधु घाटी के निवासियों की सभ्यता को जानने का मूल स्रोत है
—नगरों के अवशेष
- मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की पुरातात्विक खुदाई के प्रभारी थे
—सर जॉन मार्शल

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- किस प्रमुख पशु का अंकन हड़प्पा संस्कृति की मुहरों पर नहीं मिलता? **—घोड़ा**
- 'जुते हुए खेत' की खोज की गई थी **—कालीबंगा में**
- **सुमेल**—लोथल - गोदीबाड़ा
  कालीबंगा - जुता हुआ खेत
  धौलावीरा - पकी मिट्टी की बनी हल की प्रतिकृति
  बनवाली - हड़प्पन लिपि के बड़े आकार के 10 चिह्नों वाला शिलालेख
- किस एक पशु का हड़प्पा संस्कृति की मुहरों और टेराकोटा कलाकृतियों में निरूपण नहीं है? **—गाय**
- हड़प्पा की उन्नत जल प्रबंधन प्रणाली का पता चलता है **—मोहनजोदड़ो में**
- हड़प्पा सभ्यता की खोज हुई थी **—1922 ई. में**
- सिंधु सभ्यता का बिना दुर्ग का एकमात्र नगर कौन सा था? **—चन्हूदड़ो**
- हड़प्पा में मिट्टी के बर्तनों पर सामान्यतः किस रंग का उपयोग हुआ है? **—लाल**

3. वैदिक सभ्यता

सिन्धु सभ्यता के बाद ''वैदिक सभ्यता'' को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का आधार स्तंभ माना जाता है। भारतीय इतिहास में 1500 ई. पू. से 600 ई. पू. तक के कालखण्ड को ''वैदिक सभ्यता'' की संज्ञा दी जाती है। वैदिक सभ्यता को दो काल खण्डों में विभक्त कर प्रस्तुत किया जाता है—1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. तक के कालखण्ड को ''ऋग-वैदिक सभ्यता'' की संज्ञा दी जाती है तथा 1000 ई. पू. से 600 ई. पू. तक के कालखण्ड को ''उत्तर वैदिक सभ्यता'' के नाम से जाना जाता है। वैदिक शब्द की व्युत्पत्ति ''वेद'' (अर्थात् ज्ञान) से हुई है। इस सभ्यता और संस्कृति के निर्माताओं को ''ऋग्वेद'' में ''आर्य'' (आर्य-संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ ''श्रेष्ठ'' है) कहा गया है।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''वैदिक सभ्यता''

- तीन विदुषियां गार्गी, मैत्रेयी तथा कपिला का घर किस शहर में था? **—मिथिला**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2007/ C.P.O. परीक्षा, 2004)
- भारतीय दर्शन शास्त्र का सबसे महत्त्वपूर्ण और सबसे पुराना स्रोत कौन है? **—वेद**
  (असिस्टेंट ग्रेड (P.T.) परीक्षा, 1998)
- सबसे पुराना वेद कौन सा है? **—ऋग्वेद**
  (असिस्टेंट ग्रेड (P.T.) परीक्षा, 1998)
- किस वेद में प्राचीन वैदिक युग की सभ्यता के बारे में सूचना दी गई है? **—ऋग्वेद**
  (स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- वैदिक गणित का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ कौन सा है **—शुल्व सूत्र**
  (स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- अष्टाध्यायी किसकी रचना है **—पाणिनी**
  (सहायक निरीक्षक नियंत्रण परीक्षा, 2003/ स्टेनोग्राफर (ग्रुप-डी) परीक्षा, 1997)
- राष्ट्रीय प्रतीक के फलक के नीचे देवनागरी लिपि में उत्कीर्ण शब्द ''सत्यमेव जयते' किस उपनिषद से लिए गए हैं? **—मुंडक**
  (F.C.I. (असिस्टेंट) परीक्षा, 2012/ C.P.O. परीक्षा, 2006/हायर सेकेंडरी परीक्षा, 2011)
- सुप्रसिद्ध संस्कृत व्याकरण किसने लिखी है **—पाणिनी**
  (स्नातक स्तर (टियर-I) परीक्षा, 2010)
- योग दर्शन के पथ प्रदर्शक थे **—पतंजलि**
  (C.P.O. परीक्षा, 2011)
- वैदिक लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या था? **—कृषि**
  (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- उत्तर वैदिक युग का एक पहलू नहीं था **—आयरन (लौह) की खोज**
  (स्टेनोग्राफर (ग्रेड डी, परीक्षा, 2013)
- किसको ऋग्वेद काल में नहीं जाना जाता था? **—वर्ण प्रथा**
  (जूनियर इंजीनियरिंग परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य ''वैदिक संस्कृति''

- वैदिक संस्कृति ग्रामीण संस्कृति थी। आर्यों को लिपि का ज्ञान न होने के कारण वेद श्रवण परम्परा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाये जाते थे, इसलिये वेदों को 'श्रुति' कहा गया।
- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन व्यास ने किया था। अतएव वे वेदव्यास कहलाये।
- गेरूवर्णी मृदभाण्ड (Ochre Coloured Pottery) ऋग्वैदिक काल का प्रतिनिधित्व करता है।
- चित्रित धूसर मृदभाण्ड (Painted Gray Ware) उत्तर वैदिक काल का प्रतिनिधित्व करता है।
- बोगजकोई (एशिया माइनर) अभिलेख में वैदिक देवताओं—इन्द्र, मित्र, वरुण तथा नासत्य का वर्णन है।
- वेदों में व्याघ्र का उल्लेख नहीं मिलता।
- उत्तर वैदिक काल से लोहे का साक्ष्य मिलता है।
- वैदिक काल में मकानों का निर्माण फूस व बांस बल्ली से किया जाता था।
- **वेद :** चार वेदों के चार उपवेद हैं—(1) ऋग्वेद का आयुर्वेद, (2) यजुर्वेद का धनुर्वेद, (3) सामवेद का गन्धर्ववेद तथा (4) अथर्ववेद का शल्य शास्त्र।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- **वेदत्रयी :** वैदिक मंत्रों को चार संहिताओं में संकलित किया गया है। इनमें ऋक, यजु, साम और अथर्व में प्रथम तीन को वेदत्रयी कहा जाता है।
- **ब्राह्मण :** गद्य में रचित तथा प्रत्येक संहिता के अपने-अपने ब्राह्मण हैं।
- **आरण्यक :** ये ब्राह्मणों के ही अंग हैं।
- **उपनिषद् :** वैसे इनकी संख्या सौ से अधिक मानी जाती है, किन्तु 11 (ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डुक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक तथा श्वेता) अधिक प्रसिद्ध हैं।
- **चार कल्पसूत्र :** श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र, धर्म सूत्र एवं शुल्व सूत्र।
- **स्मृतियां :** मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, विष्णु स्मृति, कात्यायन स्मृति, बृहस्पति स्मृति, पराशर स्मृति, गौतम स्मृति, वशिष्ठ स्मृति, नारद स्मृति, देवल स्मृति।
- **वेदांग :** वेदों के अर्थ समझने और वैदिक कर्मकाण्डों के प्रतिपादन हेतु ''वेदांग'' (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद व ज्योतिष) की रचना की गई।
- **पुराण :** इनकी संख्या 18 (ब्रह्म पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, श्रीमद्भगवत् पुराण, नारद पुराण, अग्नि पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण, वाराह पुराण, स्कंद पुराण, मार्कण्डेय पुराण, वामन पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण, ब्रह्मांड पुराण, लिंग पुराण तथा भविष्य पुराण) है।

वेद	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्
ऋग्वेद	एतरेय/शांखायन	ऐतरेय/कौशीतकी	ऐतरेय कौषीतकी
यजुर्वेद	तैत्तिरीय/शतपथ	तैत्तिरीय/शतपथ	तैत्तिरीय/कठोपनिषद्/ श्वेताम्बर/वृहदारण्यक/ इशोपनिषद्
सामवेद	ताण्ड्/जैमनीय	छान्दोग्य/जैमनीय	छान्दोग्योपनिषद्
अथर्ववेद	गोपथ	कोई आरण्यक नहीं	मुण्डकोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्

ऋग्वेद

- दूसरे से सातवें मण्डल को प्राचीन मण्डल, ऋषिकुल या वंश मण्डल कहा जाता है।
- तृतीय मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख है।
- दसवां मण्डल सबसे बाद का है।
- चौथा मण्डल कृषि से सम्बन्धित है।
- सातवां मण्डल वरुण को समर्पित है।
- नौवें मण्डल के 144 सूक्तों में सोम का वर्णन है।
- इस काल की विदुषी महिलाओं में प्रमुख है—लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, सिक्ता इत्यादि।
- घोषा को चर्मरोग था।
- ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है।
- प्रथम मण्डल में इस बात की चर्चा है कि अश्विनों ने मनु को हल चलाना सिखाया।
- सर्वप्रथम चारों वर्णों पुरोहित, राजन्य, वैश्य व शूद्र का उल्लेख ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरुष सुक्त में हुआ है, जिसमें पुरोहित का उल्लेख 15 बार, राजन्य का उल्लेख 9 बार और वैश्य व शूद्र का उल्लेख एक-एक बार हुआ है।
- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिंधु नदी का उल्लेख है। इसे हिरण्यानी भी कहा गया है। ऋग्वेद में सरस्वती नदी को नदीतमा (नदियों में उत्तम) कहा गया है।

सामवेद

- सामवेद में ऐसे मंत्रों का संकलन है, जिन्हें गाया जा सके।
- सामवेद के पुरोहित उद्गाता कहलाते थे।
- संगीत के सात स्वरों की जानकारी सर्वप्रथम सामवेद से ही मिलती है।
- सामवेद का उपवेद—गांधर्व वेद है।

यजुर्वेद

- यजुर्वेद में यज्ञ संबंधी विधानों का वर्णन है।
- इसका उपवेद धनुर्वेद है।
- यजुर्वेद के पुरोहित अध्वर्यु कहलाते थे।
- यजुर्वेद का अंतिम भाग इषोपनिषद है।

अथर्ववेद

- समस्त वेदों का सार अथर्ववेद में है।
- इसे ब्रह्म वेद भी कहते हैं।
- चाँदी व गन्ने के बारे में सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
- 'मगध' के लोगों को व्रात्य कहा गया है जो वैदिक नियमों का पालन नहीं करते।
- ब्रह्मचर्य के बारे में सर्वप्रथम जानकारी अथर्ववेद से मिलती है।
- अथर्ववेद का उपवेद शिलावेद है।
- वैश्य वर्ण को अथर्ववेद में बलिकृत (कर देनेवाला) कहा गया है।
- 'गोत्र' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में किया गया है।
- गोपथ ब्राह्मण के रचनाकार गोपथ ऋषि माने जाते हैं।
- मुण्डकोपनिषद में यज्ञ की तुलना टूटी-फूटी नाव से की गई है।
- अथर्ववेद में रोग नाशक मंत्र, जादू-टोना, विवाह गीत, कृषकों के लिए व व्यापारियों के लिए आशीर्वाद सूचक मंत्र है।
- ऋग्वैदिक काल में पशुपालन मुख्य कार्य तथा कृषि गौण कार्य था, जबकि उत्तर वैदिक काल में कृषि मुख्य कार्य हो गया।
- गाय की महत्ता आर्यों के जीवन में अधिक थी। गाय से अनेक शब्दों की व्युत्पत्ति हुई है। जैसे :—गोमत—धनी व्यक्ति, गोधूली—शाम का समय, गोहना—अतिथि, अघन्या—न मारी जाने वाली गाय।
- ऋग्वेद में वर्णित गविष्टि शब्द का तात्पर्य गाय के खोज से स्थापित किया जाता है।
- पुत्री को दुहित्री (गाय दुहने वाली) कहा जाता था।
- पश्चिम का शासक - स्वराट
- पूर्व का शासक - सम्राट
- दक्षिण का शासक - भोज
- मध्य का शासक - राजा
- उत्तर का शासक - विराट

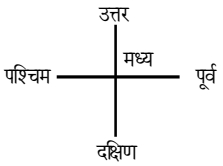

- वैदिक ग्रन्थों में कुल 33 देवताओं का उल्लेख है। जिन्हें तीन भागों में बांटा जा सकता है
- ऋग्वैदिक काल के सबसे महत्त्वपूर्ण देवता इन्द्र थे जिनका 250 बार उल्लेख है।
- इन्द्र को 'पुरन्दर' व रथेष्ठ कहा गया है।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

षड्दर्शन (कुल 6)

दर्शन	प्रतिपादक	दर्शन	प्रतिपादक
1. सांख्य दर्शन	कपिल मुनि।	4. वैशेषिक दर्शन	मुनि कणाद।
2. योग दर्शन	पतंजलि।	5. पूर्व मीमांसा	जैमिनी।
3. न्याय दर्शन	गौतम।	6. उत्तर मीमांसा	वादरायण।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- भारतीय दर्शन की प्रारंभिक शाखा कौन है —**सांख्य**
- 'भाग' और 'बलि' थे —**राजस्व के स्रोत**
- कर्म का सिद्धांत संबंधित है —**मीमांसा से**
- वासुदेव कृष्ण की पूजा सर्वप्रथम किसने प्रारंभ की —**भागवत ने**
- कपिल मुनि द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक प्रणाली है —**सांख्य दर्शन**
- उपनिषद पुस्तकें हैं —**दर्शन पर**
- योग दर्शन के प्रतिपादक हैं —**पतंजलि**
- 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व के 16 महाजनपदों के विषय में किस बौद्ध ग्रंथ से जानकारी मिलती है ? —**अंगुत्तर निकाय**
- न्याय दर्शन को प्रचारित किया था —**गौतम ने**
- आजीविका संप्रदाय के संस्थापक थे —**मक्खलि गोशाल**
- ऋग्वेद संहिता का नौवा मंडल पूर्णतः समर्पित है —**सोम देवता को**
- प्रसिद्ध दस राजाओं का युद्ध किस नदी के तट पर लड़ा गया था —**परुष्णी (रावी)**
- वैदिक युगीन सभा थी —**मंत्रिपरिषद**
- सर्वाधिक ऋग्वैदिक सूक्त समर्पित है —**इन्द्र को**
- प्राचीन काल के महान विधि निर्माता थे —**मनु**
- प्राचीन नगर तक्षशिला किन नदियों के बीच स्थित है —**सिंधु व झेलम**
- 'आर्य' शब्द इंगित करता है —**श्रेष्ठ वंश का**
- सबसे पुराना वेद कौन सा है? —**ऋग्वेद**
- वेदों में से किस एक में जादुई माया और वशीकरण का वर्णन है? —**अथर्ववेद**
- किस वेद में प्राचीन वैदिक युग की सभ्यता के बारे में सूचना दी गई है? —**ऋग्वेद**
- गायत्री मंत्र किस पुस्तक में उल्लिखित है? —**ऋग्वेद**
- धर्मशास्त्रों में भू-राजस्व की दर बताई गई है —**उपज का 1/6 भाग**
- आरंभिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी है —**सिंधु**
- किस वैदिक साहित्य में मोक्ष की चर्चा मिलती है? —**उपनिषद्**
- मनुस्मृति संबंधित है —**समाज व्यवस्था से**
- योग दर्शन के प्रतिपादक हैं —**महर्षि पतंजलि**
- 'शुद्ध अद्वैतवाद' का प्रतिपादन किया था —**वल्लभाचार्य ने**
- गायत्री मंत्र की रचना की थी —**विश्वामित्र ने (ऋग्वेद)**
- 'सत्यमेव जयते' शब्द लिया गया है —**मुण्डकोपनिषद् से**
- सांख्य दर्शन के प्रतिपादक माने जाते हैं —**कपिल मुनी**
- विश्व का पहला गणतंत्र स्थापित किया गया —**लिच्छवि द्वारा (वैशाली)**
- **सुमेल—**

वेद		विषय-वस्तु
ऋग्वेद	-	स्तोत्र एवं प्रार्थनाएं
यजुर्वेद	-	स्तोत्र एवं कर्मकांड
सामवेद	-	संगीतमय स्रोत
अथर्ववेद	-	तंत्र-मंत्र एवं वशीकरण (औषधि)

4. संगम काल

संस्कृत शब्द "संगम" का अर्थ होता है—"सभा"। "तमिल संगम" तमिल विद्वानों और कवियों की एक सभा थी। इस साहित्यिक सभा की स्थापना पांड्य राजाओं ने की थी। तमिल परंपरा के अनुसार पौराणिक समय में तीन संगम आयोजित (पहला संगम प्राचीन मदुरै में, दूसरा संगम कपाटपुरम् तथा तीसरा मदुरै में) माने जाते हैं। कतिपय इतिहासकारों द्वारा तृतीय संगम ईसा युग से कुछ शताब्दियों पूर्व माना जाता है।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में "संगम काल"

- संगम युग का संबंध कहां के इतिहास से है? —**तमिलनाडु**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2000)
- "लाल चेर" के नाम से प्रसिद्ध वह चेर राजा कौन था जिसने "कण्णगी" के मंदिर का निर्माण कराया था? —**सिंचगुट्टवन**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2002)
- तमिलनाडु भाषा के "शिलाप्पदिकारम" और मणिमेखला" नामक गौरव ग्रंथ किससे संबंधित है? —**हिन्दू धर्म**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2002)
- चोल वंश में ग्राम प्रशासन के बारे में किस शिलालेख में उल्लेख मिलता है? —**उत्तरामेरुर**
  (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- संगम काल में रोमन व्यापार का केन्द्र था —**अरिकामेडु**
  (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- पश्चिमी चालुक्य वंश का प्रसिद्ध शासक कौन था? —**पुलकेशिन द्वितीय**
  (मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- किस चोल शासक ने नई राजधानी गंगईकांडाचोलपुरम का निर्माण किया? **—राजेन्द्र प्रथम**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- चोल के स्थानीय स्वशासन में कितने प्रकार की सभाएँ थी? **—तीन**
(प्रसार भारती इजीनियरिंग असिस्टेंट परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य ''संगम काल''

- संगम काल का समय पहली शताब्दी से तीसरी शताब्दी माना जाता है।
- संगम काल की जानकारी का मुख्य स्रोत मेगस्थनीज की इण्डिका, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख तथा इरैनार अगप्पोरूल की रचनाएं हैं।
- संगम का तात्पर्य तमिल विद्वानों की परिषद से है। इन संगमों में साहित्यों का संकलन किया गया। पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में तीन संगमों का आयोजन किया गया था।
- प्रथम संगम का आयोजन ऋषि अगस्त्य की अध्यक्षता में मदुरा (तमिलनाडु) में हुआ।
- द्वितीय संगम का आयोजन पहले ऋषि अगस्त्य तथा बाद में तोलकाप्पियर की अध्यक्षता में कपाटपुरम् या अलवै में हुआ।
- तृतीय संगम उत्तरी मदुरा में नक्कीरर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।
- जहां प्रथम संगम का कोई भी ग्रंथ उपलब्ध नहीं है, वहीं दूसरे संगम का एकमात्र उपलब्ध ग्रंथ तोलकाप्पियर रचित व्याकरण ग्रंथ तोलकाप्पियम् है।
- तृतीय संगम के ग्रंथों को कई संकलनों में संकलित किया गया है।
- शिलप्पादिकारम्, मणिमेखलै तथा जीवक चिंतामणि को तमिल साहित्य का महाकाव्य माना जाता है।
- शिलप्पादिकारम् का अर्थ है- नुपूर की कहानी। इस महाकाव्य की रचना चेर शासक शेनगुट्टवन के भाई इलांगोआडिगल के द्वारा की गई। इस महाकाव्य के मुख्य पात्र कोवलन्, उसकी पत्नी (कण्णगि) तथा माधवी नाम की एक वेश्या है।
- मणिमेखलै की रचना एक बौद्ध अन्न व्यापारी सीतलैसत्तनार के द्वारा की गई थी। इस महाकाव्य का मुख्य पात्र कोवलन् तथा माधवी से उत्पन्न पुत्री मणिमेखलै है।
- जीवक चिंतामणि, जिसे विवाह ग्रंथ भी कहा जाता है, के लेखक तिरूतंक्कदेवर हैं।
- संगम साहित्यों में दक्षिण भारत के तीन वंशों—चोल, पाण्ड्य तथा चेर का उल्लेख है।
- चोलों का राज्य कावेरी घाटी में स्थित था। इसकी राजधानी मनलूर (बाद में उरैयूर) थी।
- चोल राज्य का सबसे महत्त्वपूर्ण राजा करिकाल (अर्थात् झुलसे हुए टांगों वाला) था।
- चोल राज्य का प्रतीक चिह्न बाघ था।
- चेर का राज्य कोंकण, मालाबार तट व कोचीन था। इसकी राजधानी वज्जि या करूर थी। शेनगुट्टवन इस राज्य का सबसे प्रतापी राजा था। प्रतीक चिह्न धनुष था।
- पाड्य राज्य रामनाथपुरम से त्रावणकोर तक था।
- पाड्य राज्य की राजधानी मदुरै थी।
- इस वंश का सबसे प्रतापी राजा नेडुजेलियन था, जिसने रोमन शासक ऑगस्टस के दरबार में अपना दूत भेजा था।

5. प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन और महाजनपद

प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन जहां भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विभिन्न कालखण्डों के विकासक्रम पर प्रकाश डालता है, वहीं विभिन्न धार्मिक आंदोलनों व धर्मों के उद्भव को भी प्रामाणिकता प्रदान करता है। वस्तुतः ईसा पूर्व छठी शताब्दी केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व के लिए एक विपुल क्रांति-परिवर्तनों की शताब्दी थी। यह कालखण्ड प्रबुद्ध दार्शनिक विचारों एवं सत्यानुसंधान का काल था। इसी काल में भारत में मध्य गंगा की घाटी में दो प्रमुख धर्मों- बौद्ध एवं जैन का प्रार्दुभाव हुआ।

छठी सदी ई. पू. में व्यापार की प्रगति, लोहे का व्यापक प्रयोग, मुद्रा का प्रचलन और नगरों के उत्थान ने बौद्धिक आंदोलन के रूप में जहां एक ओर सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए, वहीं उन्हीं परिस्थितियों ने राजनीतिक व्यवस्था में भी युगांतकारी परिवर्तन किए। उत्तर वैदिक काल के जनपद (पाणिनि ने अपने ''अष्टाध्यायी'' में 22 जनपदों का उल्लेख किया है) अब महाजनपदों में परिवर्तित हो गए। जहां तक महाजनपदों की संख्या का प्रश्न है, विभिन्न ग्रंथों में इसकी अलग-अलग संख्याएं मिलती हैं। बौद्धग्रंथ ''अंगुत्तर निकाय'' के अनुसार, 16 ''महाजनपद'' ही अस्तित्व में थे।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन''

- लुम्बिनी किसका जन्मस्थान है? **—बुद्ध का**
(स्टेनोग्राफर (ग्रेड-डी) परीक्षा, 1997)
- गौतम बुद्ध का जन्म किस स्थान पर हुआ था? **—लुम्बिनी (नेपाल)**
(असिस्टेंट ग्रेड (P.T.) परीक्षा, 1998/ मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- जैनियों के पहले तीर्थंकर कौन थे? **—ऋषभ देव**
(स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- महावीर की माता कौन थीं? **—त्रिशला**
(मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- बौद्ध ग्रंथों ''पिटकों'' की रचना किस भाषा में की गई थी? **—प्राकृत**
(मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- त्रिपिटक किसका धार्मिक ग्रंथ है? **—बौद्धों का**
(मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- आजीविका एक सम्प्रदाय था **—बुद्ध के समसमायिक**
(टैक्स असिस्टेंट परीक्षा,, 2004)
- नालंदा विश्वविद्यालय विद्या का एक महान केंद्र था। यह किस धर्म से संबंधित है? **—बौद्ध धर्म**
(मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- बौद्धों का पवित्र ग्रंथ कौन सा है? **—त्रिपिटक**
(स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2005)
- मानव के दुःखों के अंत के लिए ''अंष्टांगिक मार्ग'' पथ का प्रतिपादन किसने किया? **—गौतम बुद्ध**
(टैक्स असिस्टेंट परीक्षा,, 2004)
- बौद्ध धर्म ने समाज के दो वर्गों को अपने साथ जोड़कर एक महत्त्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा, ये वर्ग था **—स्त्रियां एवं शूद्र**
(C.P.O. परीक्षा, 2003)
- प्राचीनकाल में स्रोत सामग्री लिखने के लिए प्रयुक्त भाषा थी **—ब्राह्मी**
(C.P.O. परीक्षा, 2006)
- बौद्ध धर्म में बुल का संबंध महात्मा बुद्ध के जीवन की किस घटना के साथ है? **—जन्म से**
(टैक्स असिस्टेंट परीक्षा, 2006)
- बुद्ध का क्या अर्थ होता है? **—ज्ञान की प्राप्ति**
(सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2006)
- ''पर्यूषण पर्व'' किसके द्वारा मनाया जाता है? **—जैनियों द्वारा**
(मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2006)
- एलोरा में गुफाएं और शैलकृत मंदिर हैं **—हिन्दू, बौद्ध और जैन**
(स्नातक स्तर (PT) परीक्षा, 2008)
- किस मृद्भाण्ड (पॉटरी) भारत में द्वितीय शहरीकरण के प्रारंभ का प्रतीक माना गया? **—चित्रित धूसर**
(मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2002)
- आरंभिक बौद्ध साहित्य किस भाषा में रचे गए? **—पालि**
(मल्टी टास्किंग स्टॉफ परीक्षा, 2011)
- 'इच्छा सब कष्टों का कारण है' इसका प्रचार करने वाला धर्म कौन सा है? **—बौद्ध धर्म**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- जैन साहित्य को क्या कहते हैं? **—अंग**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- प्रथम बौद्ध परिषद कहाँ आयोजित की गई? **—राजगृह**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- कौन सा शासक बुद्ध का समकालीन था? **—बिम्बिसार व प्रसेनजित**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- कनिष्क प्रथम किसका पृष्ठ पोषक था?**—महायान बुद्धवाद**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- बुद्ध के प्रथम प्रवचन को कहा जाता है **—धर्मचक्रप्रवर्तन (धम्मचक्कपबतनसुत्त)**
(संयुक्त स्नातक स्तरीय प्रा0 परीक्षा, 2013)
- बौद्ध धर्म का सम्प्रदाय कौन नहीं है? **—थेरवाद**
(संयुक्त स्नातक स्तरीय प्रा0 परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य ''प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन''

बौद्ध धर्म

छठी शताब्दी ई. पू. मध्य व निम्न मध्य गंगा घाटी में जो 62 धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ, उनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बौद्ध धर्म था। इसने ब्राह्मण धर्म के अन्दर व्याप्त कुरीतियों व कर्मकाण्डों को सशक्त चुनौती दी।

गौतम बुद्ध

- गौतम बुद्ध का जन्म लगभग 563 ई. पू. में कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी में हुआ था। (जिसकी पहचान वर्तमान समय में रूमिन्नदेई नामक स्थान से की जाती है)।
- गौतम बुद्ध के पिता शुद्धोधन कपिलवस्तु के शाक्यों के प्रधान (मुखिया) थे। उनकी माता का नाम माया था, जो कोसल गणराज्य की कन्या थी। गौतम बुद्ध के जन्म के कुछ ही दिनों के बाद उनकी माता माया का देहान्त हो गया तथा उनका पालन-पोषण उनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया।
- गौतम बुद्ध का प्रारंभिक सांसारिक जीवन वैभवपूर्ण व्यतीत हुआ, लेकिन चिन्तनशील बुद्ध ने 29 वर्ष की अवस्था में अपनी पत्नी यशोधरा तथा पुत्र राहुल को छोड़ गृह त्याग कर संन्यास ग्रहण कर लिया।
- गौतम बुद्ध के जीवन से संबंधित चार दृश्यों में—वृद्ध व्यक्ति को देखना, रोगी को देखना, मृतक को देखना तथा संन्यासी को देखना, शामिल है।
- बुद्ध का गृह त्याग बौद्ध साहित्य में महाभिनिष्क्रिमण कहा जाता है।
- बुद्ध के गृह त्याग का प्रतीक घोड़ा माना जाता है। उनके घोड़े का नाम कंथक तथा सारथी का नाम चन्ना था।
- बुद्ध ने आलार कलाम तथा रूद्रक रामपुत्र से संन्यासकाल में शिक्षाएं प्राप्त की थीं।
- कठोर तपस्या के बाद भी ज्ञान प्राप्ति न होने पर बुद्ध ने उरुवेला (बोधगया) में सुजाता नामक लड़की के हाथों खीर खाकर अपना उपवास तोड़ा था।
- महात्मा बुद्ध को गया में पीपल वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा के दिन 35 वर्ष की अवस्था में ज्ञान प्राप्ति हुई। बुद्ध ने अपना पहला उपदेश ऋषिपत्तन, (सारनाथ) में दिया।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ को बुद्ध (ज्ञानी) तथा तथागत (वस्तुओं के वास्तविक जानकार) कहा गया।

महत्त्वपूर्ण घटनाएँ व प्रतीक

माता के गर्भ में आना	हाथी
बुद्ध का जन्म	कमल
गृह त्याग	घोड़ा
ज्ञान प्राप्ति	बोधिवृक्ष
प्रथम उपदेश	धर्मचक्र
महापरिनिर्वाण	स्तूप

- ज्ञान प्राप्ति के बाद वे ऋषिपत्तन (सारनाथ) गये। यहां पर उन्होंने पांच ब्राह्मण संन्यासियों को शिक्षा (उपदेश) दिया। ये वही ब्राह्मण संन्यासी थे, जिन्होंने महात्मा बुद्ध का साथ छोड़ दिया था।
- इस प्रथम उपदेश को धर्मचक्र प्रवर्तन कहा गया। धर्मचक्र प्रवर्तन के अन्तर्गत उन्होंने चार आर्य सत्य की बात कही थी।
- महात्मा बुद्ध का प्रिय व प्रधान शिष्य (उनका निजी परिचारक भी)

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

आनंद था। महात्मा बुद्ध अपने उपदेश आनंद को ही संबोधित करके देते थे। आनंद के ही कहने पर महात्मा बुद्ध ने बौद्ध संघ में स्त्रियों के प्रवेश की अनुमति दी थी। मौसी महाप्रजापति गौतमी (जो उनकी विमाता थी) को उन्होंने वैशाली में सर्वप्रथम बौद्ध संघ में प्रवेश की अनुमति प्रदान की थी। उसके बाद मौसी (विमाता) की पुत्री सुनंदा और उसके बाद यशोधरा ने प्रव्रज्या ग्रहण की थी।

बौद्ध संगीतियाँ

क्रम	समय	स्थान	अध्यक्ष	शासनकाल
प्रथम बौद्ध संगीति	483 ई. पू.	राजगृह	महाकश्यप	अजातशत्रु
द्वितीय बौद्ध संगीति	383 ई. पू.	वैशाली	साबकमीर	कालाशोक
तृतीय बौद्ध संगीति	251 ई. पू.	पाटलिपुत्र	मोग्गलिपुत्ततिस्स	अशोक
चतुर्थ बौद्ध संगीति	ई. की प्रथम शताब्दी	कुण्डलवन (कश्मीर)	वासुमित्र (अध्यक्ष)/ अश्वघोष (उपाध्यक्ष)	कनिष्क

टिप्पणी : चतुर्थ बौद्ध संगीति के बाद बौद्ध धर्म दो भागों (हीनयान-महायान) में विभाजित हो गया।

- **चार आर्य सत्य** : बुद्ध ने सांसारिक दुःखों के संबंध में 4 आर्य सत्यों का उपदेश दिया। ये हैं—(1) दुःख, (2) दुःख समुदाय, (3) दुःख निरोध, (4) दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा।
- **अष्टांगिक मार्ग** : बुद्ध ने सांसारिक दुःखों से मुक्ति हेतु अष्टांगिक मार्ग (सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति तथा सम्यक् समाधि) की बात कही।
- **निर्वाण** : बुद्ध के अनुसार अष्टांगिक मार्गों का पालन करने के उपरांत मनुष्य की सब तृष्णा नष्ट हो जाती है तथा उसे निर्वाण (बौद्ध धर्म का परम लक्ष्य, जिसका अर्थ है "दीपक का बुझ जाना" अर्थात् जीवन मरण चक्र से मुक्त हो जाना) प्राप्त हो जाता है।
- **दस शील** : बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति को सरल बनाने के लिए 10 शीलों, अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (किसी प्रकार की संपत्ति न रखना), मद्य सेवन न करना, स्त्रियों से दूर रहना और नृत्य-गान आदि से दूर रहने पर बल दिया।
- **त्रिरत्न** : बुद्ध, धम्म एवं संघ।
- **त्रिपिटक** : इसका शाब्दिक अर्थ "तीन टोकरी" है। ये हैं—सुत्त, विनय एवं अभिधम्म पिटक।
- ज्ञान प्राप्ति के उपरांत महात्मा बुद्ध 45 वर्षों तक धर्मोपदेश (वर्षा ऋतु को छोड़कर) देते रहे।
- बुद्ध ने जीवन का अधिकांश समय (लगभग 25 वर्ष) श्रावस्ती में ही व्यतीत किया था। यहीं पर इनके सर्वाधिक अनुयायी थे।
- बुद्ध की मृत्यु 80 वर्ष की अवस्था 483 ई.पू. में चुन्द नामक एक कर्मकार के हाथों शुकर मांस खाने के कारण पावा (कुशीनारा) में हुई थी।
- बौद्ध धर्म के विकास में चार बौद्ध संगीतियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, जो महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद आयोजित की गयी थीं।
- नालन्दा विश्वविद्यालय का संस्थापक कुमारगुप्त प्रथम था।
- महायान शाखा के अन्तर्गत माध्यमिक (शून्यवाद, संस्थापक नागार्जुन) तथा विज्ञानवाद (योगाचार, संस्थापक मैत्रेयनाथ) शाखा का विकास हुआ।
- नागार्जुन की पुस्तक—प्रज्ञापारमिता सूत्र।
- महायान शाखा के अन्तर्गत बुद्ध की पहली मूर्ति बनी। बुद्ध को ईश्वर के रूप में पूजने की परम्परा इसी शाखा ने आरंभ की।
- नागार्जुन को भारत का आइंस्टीन कहा जाता है। भारत के काण्ट-धर्मकीर्ति को कहा जाता है।
- महायान शाखा में स्वर्ग-नरक की अवधारणा है।
- महायान शाखा के पोषक शासक थे—कनिष्क, हर्षवर्धन इत्यादि।
- महायान में बोधिसत्व की अवधारणा का विकास हुआ। बोधिसत्व का तात्पर्य उस अवस्था से लिया गया है, जिसमें बुद्धत्व की प्राप्ति के बाद व्यक्ति सारी दुनिया के लोगों को मोक्ष प्राप्ति के उपदेश देने में संलग्न हो जाता है।
- महायान का तात्पर्य बड़ी सवारी तथा हीनयान का तात्पर्य छोटी सवारी होता है।
- बंगाल का कट्टर शैव शासक शशांक था जिसने उस बोधि वृक्ष (पीपल वृक्ष) को कटवा दिया था, जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
- सातवीं सदी के आसपास वज्रयान नामक एक और शाखा बनी जिसकी पढ़ाई नालंदा विश्वविद्यालय में होती थी। इसका गवर्नर धर्मपाल था।
- वर्ण व्यवस्था पर जैन धर्म की अपेक्षा बौद्ध धर्म ज्यादा कट्टर (क्रांतिकारी) तरीके से प्रहार करता है। अतः बौद्ध धर्म ज्यादा क्रांतिकारी है।
- बौद्ध धर्म को विभिन्न शासकों का संरक्षण प्राप्त था।
- बौद्ध धर्म को आम जनता द्वारा स्वीकार किया गया।
- बौद्ध संघ द्वारा पालि भाषा में अपनी बातों का जनता के सामने रखना।
- बौद्ध धर्म के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के लिये मृत्यु होना जरूरी नहीं है, मोक्ष इस जीवन में भी संभव है। बौद्ध धर्म मृत्यु को महापरिनिर्वाण मानता है।
- बौद्ध धर्म पुनर्जन्म में विश्वास करता है।

महाजनपद युग

i. छठी शताब्दी ई. पू. में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन चले।

ii. छठी शताब्दी ई. पू. में जैन व बौद्ध धर्म का उदय हुआ।

iii. दूसरी नगरीय या नागरिक क्रान्ति हुई, जिसके अन्तर्गत 16 महाजनपदों का आविर्भाव हुआ, इनमें मगध महाजनपद आगे चलकर साम्राज्य बना।

iv. लोहे का उपयोग प्रारंभ हुआ। (कार्बोराइज्ड लोहे का व्यापक उपयोग शुरू हुआ।)

v. पञ्चमार्क सिक्कों का प्रचलन।

vi. कृषि क्रान्ति।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

छठी शताब्दी ई. पू. में महाजनपदों के बारे में जानकारी देने वाले मुख्य साधन

बौद्ध साहित्य के अंतर्गत	जैन साहित्य के अन्तर्गत
अंगुत्तर निकाय।	भगवती सूत्र।

- बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय का वर्णन महत्त्वपूर्ण माना जाता है। अंगुत्तर निकाय के अनुसार 16 महाजनपद निम्न थे :
  (1) काशी, (2) कोशल, (3) अंग, (4) मगध,
  (5) मल्ल, (6) वज्जि, (7) चेदि, (8) कम्बोज,
  (9) शूरसेन, (10) गान्धार, (11) अवन्ति, (12) पाञ्चाल,
  (13) कुरू, (14) अश्मक, (15) वत्स, (16) मत्स्य।
- इन महाजनपदों में कुछ गणतान्त्रिक महाजनपद थे, तो कुछ राजतन्त्रात्मक महाजनपद।
- **गणतन्त्र महाजनपद**—ऐसे राज्यों का शासन राजा द्वारा न होकर गण अथवा संघ द्वारा होता था। इस प्रकार के दो महाजनपद प्रमुख थे—वज्जि तथा मल्ल। वज्जि आठ राज्यों का संघ था। इसमें वज्जि भी एक राज्य (महाजनपद) था तथा उसके अलावा वैशाली, मिथिला, कुण्डग्राम भी प्रसिद्ध थे।
- **राजतंत्र महाजनपद**—ऐसे महाजनपद राजतंत्रात्मक महाजनपद कहलाते थे जिनका अध्यक्ष राजा होता था। इस प्रकार के राज्य थे—अंग, मगध, चेदि, वत्स, कोशल, शूरसेन, अश्मक, गन्धार इत्यादि। राजतंत्र वाले महाजनपदों की संख्या-14 थी।
- वर्तमान वाराणसी तथा उसका समीपवर्ती क्षेत्र ही प्राचीन समय में काशी महाजनपद कहलाता था।
- उत्तर में वरुणा तथा दक्षिण में असी नदियों के बीच में वाराणसी नगरी इसकी राजधानी थी।
- आगे चलकर काशी मगध के विस्तारवाद में आ गया। दूसरे शब्दों में, मगध ने काशी पर अधिकार कर लिया।
- मगध राज्य, वर्तमान बिहार के पटना व उसके आसपास के जिलों में अवस्थित था।
- मगध राज्य, कालान्तर में यह उत्तर भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य बना।
- मगध के क्षेत्रों पर सर्वप्रथम हर्यक वंश का शासन स्थापित हुआ।
- मगध के क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों की अधिकता थी।
- मगध प्रमुख व्यापारिक मार्ग पर अवस्थित था।
- मध्य व निम्न मध्य गंगा घाटी का उपजाऊ क्षेत्र मगध के पास था।
- रोपनी की तकनीक, सिक्कों का प्रचलन व मगध के सम्राटों का महत्त्वाकांक्षी होना इसके विकास का कारण था।
- हर्यक वंश का संस्थापक बिम्बिसार था जो महात्मा बुद्ध का मित्र व उनका संरक्षक था। बिम्बिसार ने अपनी राजधानी राजगृह या गिरिव्रज को बनाया। उसने श्रेणिय (सेना रखनेवाला) की उपाधि धारण की। उसने तीन नीतियों को महत्त्व दिया- कूटनीति, वैवाहिक नीति व आक्रमण नीति। कूटनीति संबंधों के अंतर्गत गान्धार नरेश पौष्कर सारीन के पास अपना दूत भेजकर उसको मित्र बनाया। वैवाहिक नीतियों के अन्तर्गत उसने तीन विवाह किये—लिच्छवी की राजकुमारी चेल्लना से, कोशल की कन्या महाकोशला देवी से (महाकोशला देवी से विवाह के बाद उसे काशी दहेज में प्राप्त हो गया) तथा मद्र देश की राजकुमारी क्षेमा (या खेमा) से। फलतः उसका पड़ोसी महाजनपदों से संबंध मधुर हो गया। आक्रमण नीति के अन्तर्गत उसने अंग के शासक ब्रह्मदत की हत्या कर अंग को मगध साम्राज्य के अन्तर्गत मिला लिया।

मगध

(तीन वंशों का शासन)

- हर्यक वंश—बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदायिन।
- शिशुनाग वंश—शिशुनाग, कालाशोक
- नन्द वंश—महापद्मनन्द, घननन्द।

- बिम्बिसार के बाद अजातशत्रु शासक बना, उसने कुणिक की उपाधि धारण की। अजातशत्रु ने अपने मंत्री वस्सकार की सहायता से लिच्छवियों में फूट डलवाकर उन्हें पराजित कर वैशाली को मगध साम्राज्य में मिला लिया। उसने राजगृह की किलेबन्दी भी कराई थी। वह दो प्रकार के हथियारों का प्रयोग करता था—रथमुसल व महाशिलाकंटक।
- इसके बाद उदायिन शासक बना। इसने पाटलिपुत्र को मगध साम्राज्य की राजधानी बनाया। उदायिन जैन मतावलंबी था।
- इसके बाद शिशुनाग वंश की स्थापना हुई। जिसने कुछ समय तक मगध साम्राज्य पर अपनी सत्ता स्थापित किये रखा।

छठीं शताब्दी ई. पू. के अन्य महत्त्वपूर्ण रूढ़िवादी मत

प्रतिपादक	मत (सम्प्रदाय)
पुरण कश्यप	अक्रियवादी
मक्खलिपुत्र गोशाल	आजीवक सम्प्रदाय के संस्थापक
संजय	अनिश्चयवादी और संदेहवादी
पुकुध कच्चायन	कर्म व पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं था

जैन धर्म

- जैन धर्म को बौद्ध धर्म की भांति एक प्रतिक्रियावादी धर्म माना जाता है।
- जैन धर्म के प्रवर्तक ऋषभदेव थे, जिनका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

जैन धर्म के तीर्थंकरों के नाम इस प्रकार हैं–

(1) ऋषभदेव या आदिनाथ, (2) अजितनाथ, (3) सम्भव नाथ, (4) अभिनन्दन, (5) सुमति, (6) पद्मप्रभु, (7) सुपार्श्व, (8) चन्द्रप्रभा, (9) पुष्पदन्त, (10) शीतल, (11) श्रेयान्स, (12) वासुपूज्य, (13) विमल, (14) अनन्त, (15) धर्म, (16) शान्ति, (17) कुन्थु, (18) अरह, (19) मल्लिनाथ, (20) मुनिसुब्रत, (21) नेमिनाथ, (22) अरिष्टनेमि, (23) पार्श्वनाथ, (24) महावीर।

- महावीर का जन्म 540 ई. पू. में वैशाली के समीप कुण्डग्राम में क्षत्रिय परिवार में हुआ था। महावीर के पिता सिद्धार्थ कुण्डग्राम (ज्ञातृक क्षत्रिय) के प्रधान थे, जो वज्जि संघ के अन्तर्गत था। राजा सिद्धार्थ का विवाह वैशाली की लिच्छवी राजकुमारी त्रिशला से हुआ था, जो लिच्छवी शासक चेटक की बहन थी। सिद्धार्थ-त्रिशला के छोटे पुत्र का नाम वर्धमान था, जो भविष्य में महावीर नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- जैन परम्परा के अनुसार, वर्धमान पहले ब्राह्मण ऋषभदत्ता की पत्नी देवनंदा के गर्भ में आये, परन्तु अभी तक के समस्त तीर्थंकर क्षत्रिय वंश में उत्पन्न हुए थे, इसलिये इन्द्र ने वर्धमान को देवनंदा के गर्भ से हटाकर त्रिशला के गर्भ में स्थापित किया।
- वर्धमान का विवाह यशोदा नामक कन्या से हुआ, जिससे उन्हें एक पुत्री प्रियदर्शना की प्राप्ति हुई।
- प्रियदर्शना का विवाह जामालि से हुआ था।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- 30 वर्ष की अवस्था में वर्धमान ने अपने अग्रज नन्दिवर्धन से आज्ञा प्राप्त कर गृह त्याग कर दिया। बारह वर्षों की कठोर तपस्या के पश्चात् जुम्भिक ग्राम के निकट ऋजुपालिका नदी के तट पर शाल वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान (कैवल्य) की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद वे जिन (इंद्रियों का विजेता) केवलिन, निग्रन्थ (बंधिन-रहित), अर्हत (योग्य), महावीर (पराक्रमी) आदि कहलाये।
- जिन के आधार पर महावीर के अनुयायियों को जैन कहा गया।

धर्म प्रचार

- महावीर को 42 वर्ष की अवस्था में ज्ञान प्राप्त हुआ था। उन्होंने जीवन के अन्तिम 30 वर्ष धर्म-प्रचार में ही व्यतीत किये। नग्न रहने के कारण महावीर जनसाधारण के अत्यधिक निकट नहीं आ सके, तथापि उन्होंने लोगों को प्रभावित किया। राजपरिवार से सम्बन्धित होने कारण महावीर को धर्म प्रचार में पर्याप्त सहायता मिली।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर ने अपना पहला उपदेश राजगृह में विपुचल पहाड़ी के पास दिया।

महावीर के नाम
केवलिन, निग्रन्थ, नाथपुत्त, जिन, अर्हत

- इनका पहला शिष्य इनका दामाद जामालि बना।
- चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना महावीर स्वामी की प्रथम भिक्षुणी बनी।
- महावीर के प्रधान शिष्य 11 थे, जिन्हें 'गणधर' कहा जाता था।
- महावीर स्वामी ने धर्म प्रचार की भाषा प्राकृत को अपनाया जबकि महात्मा बुद्ध ने पालि भाषा में धर्म प्रचार किया था।
- महावीर ने अनेक राज्यों में स्वयं जाकर धर्म प्रचार किया। जैन धर्म के प्रचार के लिये उन्होंने पावापुरी में जैन संघ की भी स्थापना की थी। प्रारंभ में महावीर अकेले ही धर्म प्रचार करते थे, लेकिन बाद में उनके शिष्य भी उनके साथ रहकर धर्म प्रचार करने लगे, जिनमें मुख्य थे—आनंद, सुरदेव, कुण्डकोलिय, कामदेव आदि।
- महावीर की मृत्यु 72 वर्ष की अवस्था में पावा (बिहार) के मल्ल शासक शस्तिपाल (या हस्तिपाल) के दरबार में हुई।
- महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद जैन संघ का अध्यक्ष सुधर्मन बना।

जैन धर्म के सिद्धांत

- महावीर स्वामी जैन तीर्थंकर परम्परा के चौबीसवें व अन्तिम तीर्थंकर थे, इन्हें जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उल्लेखनीय है कि जैन धर्म के संस्थापक आदिनाथ (पहले तीर्थंकर) को माना जाता है।

कर्म सिद्धांत

- जैन धर्म में कर्म के सिद्धांत का विश्लेषण किया गया है। व्यक्ति इस सांसारिक बंधनों से इसलिये जकड़ा रहता है, क्योंकि कर्म का जीव की ओर बहाव (आश्रव) होता है। कर्मों का जीव की ओर बहाव रुक जाना 'संवर' कहलाता है। जबकि पहले से किये गये कर्म फल का रुक जाना निर्जरा कहलाता है।

जैन धर्म में त्रिरत्न कहा गया है–

i. सम्यक् दर्शन—तीर्थंकरों के उपदेशों में विश्वास।

ii. सम्यक् ज्ञान—जैन धर्म के सिद्धांतों का ज्ञान।

iii. सम्यक् चरित्र—अच्छे कार्यों को करने का निर्देश।

- पार्श्वनाथ (तेइसवें तीर्थंकर) ने जैन धर्म के पञ्च महाव्रतों में प्रथम चार महाव्रत का प्रतिपादन किया था। पांचवें महाव्रत का प्रातिपादन महावीर द्वारा किया गया।

i. अहिंसा—किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं करना।

ii. सत्य—हमेशा सत्य बोलना।

iii. अस्तेय—चोरी न करना।

iv. अपरिग्रह—जरूरत से ज्यादा धन संग्रह नहीं करना।

v. ब्रह्मचर्य—ब्रह्मचर्य का पालन करना। यह महावीर स्वामी द्वारा जोड़ा गया।

- गृहस्थ जीवन में रहनेवाले जैनियों के लिये पञ्च महाव्रतों में कठोरता में कमी के कारण इन्हें अणुव्रत कहा गया।
- सल्लेखना के अंतर्गत जैन धर्म में निर्जल व निराहार रहकर प्राण त्याग किया जाता है। मौर्य शासक चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना प्राण त्याग सल्लेखना पद्धति से ही किया था।
- जैन विद्वान हेमचन्द्र के ग्रन्थ परिशिष्ट पर्वन के अनुसार मगध में 12 वर्ष के भयंकर अकाल के समय भद्रबाहु के नेतृत्व में जैन भिक्षुओं का एक दल कर्नाटक के पास श्रवणबेलगोला चला गया। जबकि स्थूलभद्र के नेतृत्व में जैन भिक्षुओं का एक दल मगध में रुका रहा। भद्रबाहु के वापस लौटने पर जैन धर्म दो भागों में विभाजित हुआ। एक भाग के दल प्रमुख स्थूलभद्र थे, जबकि दूसरे भाग के दल प्रमुख भद्रबाहु थे।
- वस्त्र पहनने और न पहनने के विवाद पर प्रथम जैन संगीति (बैठक) हुई।
- स्थूलभद्र के नेतृत्व ने दिगंबर (नग्न रहने वाले) भिक्षुओं का एक दल बना।
- भद्रबाहु के नेतृत्व में श्वेताम्बर (श्वेत वस्त्र पहनने वालों) का एक दल बना।

प्रथम जैन संगीति

- अध्यक्ष—स्थूलभद्र
- आयोजन स्थल—पाटलिपुत्र
- समकालीन शासक—चन्द्रगुप्त मौर्य
- इस संगीति के परिणामस्वरूप जैन धर्म श्वेताम्बर व दिगम्बर जैसी दो शाखाओं में बंट गया।
- इस संगीति में 12 अंग के रूप में जैन धर्म के शिक्षाओं व सिद्धांतों का संकलन किया गया।

दूसरी जैन संगीति

- आयोजन वर्ष—512 ईस्वी।
- आयोजन स्थल—वल्लभी (गुजरात)।
- अध्यक्ष—देवाधिधर्मिणी क्षमाश्रमण।
- **जैन साहित्य** : जैन साहित्य को "आगम" (इसका अर्थ होता है-सिद्धांत) कहा जाता है। इसमें 12 अंग, 12 उपांग।

श्वेताम्बर व दिगम्बर में अंतर

श्वेताम्बर	दिगम्बर
इस सम्प्रदाय के मुखिया स्थूल भद्र थे।	इस सम्प्रदाय के मुखिया भद्रबाहु थे।
ये श्वेत वस्त्र पहनते थे	ये नग्न रहते थे
ये महावीर स्वामी को विवाहित मानते थे	ये महावीर स्वामी को विवाहित नहीं मानते थे
इनके अनुसार 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री थे।	इनके अनुसार मल्लिनाथ पुरुष थे।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- भद्रबाहु ने 'कल्पसूत्र' लिखा था।
- प्रभाचन्द्र ने "प्रमेय कमलमार्तण्ड" की रचना की थी।
- पार्श्वनाथ पहले ऐतिहासिक तीर्थंकर माने जाते हैं।
- पार्श्वनाथ ने निग्रन्थ सम्प्रदाय (जैन धर्म का प्राचीन रूप) की स्थापना की। पुष्पचुला नामक स्त्री निग्रन्थ सम्प्रदाय की स्त्री संघ की अध्यक्षा थी।

जैन व बौद्ध धर्म में अन्तर

जैन धर्म	बौद्ध धर्म
-बौद्ध धर्म की तुलना में जैन धर्म प्राचीन है	यह धर्म जैन धर्म से बाद का है
-जैन आत्मवादी है	बौद्ध धर्म अनात्मवादी है
-जैन धर्म काया क्लेश पर विश्वास करता है	यह मध्यम मार्गी है
-यह बौद्ध धर्म की तुलना में वर्ण व्यवस्था पर ज्यादा जोरदार तरीके से प्रहार नहीं कर पाया	बौद्ध धर्म वर्ण व्यवस्था पर क्रांतिकारी प्रहार करता है।
-जैन धर्म ज्यादा अहिंसक है	जैन धर्म की तुलना में कम अहिंसक है

- जैन शब्द की उत्पत्ति 'जिन' से हुई है, जिसका तात्पर्य विजेता होता है। 42 वर्ष की आयु में जब महावीर को कैवल्य (ज्ञान) की प्राप्ति हुई तो वे जिन या विजेता कहलाये।
- महावीर स्वामी के पहले जैन धर्म के 23 तीर्थंकर हुए। दूसरे शब्दों में, जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर थे।
- तीर्थंकर का तात्पर्य है, जो व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को रास्ता बताकर भवसागर से पार कराये।
- **वैष्णव धर्म** : वैष्णव धर्म को पहले भागवत धर्म के नाम से भी जाना जाता था। इसका प्रचलन सर्वप्रथम मथुरा के समीपवर्ती क्षेत्रों में हुआ। वैष्णव लोग अहिंसा पर बल देते हैं। मांस भक्षण को पाप मानते हैं और विष्णु की भक्ति को मोक्ष का परम साधन मानते हैं। अवतारों की कल्पना इस धर्म का एक महत्त्वपूर्ण तत्व हैं। वैसे तो 24 अवतार माने गए हैं किन्तु 10 प्रमुख (दशावतार) हैं—कूर्म, मत्स्य, वाराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम (रामचन्द्र), बलराम, बुद्ध और कल्कि। ऐसा विश्वास है कि कलयुग में कल्कि अवतार होगा। कृष्ण साक्षात् विष्णु थे और उन्हें अवतारों की श्रेणी में नहीं रखा जाता है।
- **शैव धर्म** : वैष्णव धर्म के साथ ही साथ शैव धर्म का भी विकास हुआ। भगवान शिव इसी धर्म के अनुयायियों के उपास्य हैं। इस धर्म के विकास की प्रक्रिया में कुछ सम्प्रदायों—शैव, पाशुपत, कापालिक और कालामुख का विकास हुआ। शैव सिद्धांत के अनुसार सृष्टि के मूल तत्व—पति (शिव), पशु (जीवात्मा), पाश (जीवात्मा को बांधने वाला तत्व) है। शैव धर्म के अनुसार पाश चार प्रकार (मल, कर्म, माया और रोध) के हैं, जबकि 4 पाद हैं—विद्या, क्रिया, योग और चर्या।

प्रमुख तीर्थंकर	उनके प्रतीक
ऋषभदेव	बैल (वृषभ)
अजितनाथ	हाथी
नेमिनाथ	नीला कमल
अरिष्ट नेमी	शंख
पार्श्वनाथ	सर्प फण
महावीर	सिंह (शेर)

जैन व बौद्ध धर्म में समानताएं

- दोनों धर्म अनिश्वरवादी है।
- दोनों धर्म ब्राह्मण धर्म के विरोधी हैं।
- दोनों धर्म निवृत मार्ग का अनुसरण करने पर बल देते हैं।
- दोनों धर्म के प्रवर्तक क्षत्रिय वर्ण के थे व दोनों का संबंध राजपरिवार से था।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- मृगदाव (सारनाथ) में बुद्ध द्वारा दिया गया प्रथम उपदेश किस नाम से जाना जाता है **—धर्मचक्रप्रवर्तन**
- सारनाथ में पहला प्रवचन किसने दिया था ?**—महात्मा बुद्ध ने**
- बौद्ध तथा जैन, दोनों धर्म विश्वास करते हैं **—कर्म तथा पुनर्जन्म के सिद्धांत में**
- किस बौद्ध ग्रंथ में संघ जीवन के नियम प्राप्त होते हैं? **—विनय पिटक**
- बुद्ध के जीवन की चार प्रमुख घटनाओं का संबंध किन स्थानों से है?

घटना		स्थान
जन्म	-	लुम्बिनी
ज्ञान प्राप्ति	-	बोधगया
प्रथम प्रवचन	-	सारनाथ
निधन	-	कुशीनगर

- जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी का जन्म स्थान था **—कुण्डग्राम**
- किस नगर में प्रथम बौद्ध सभा आयोजित की गई थी? **—राजगीर**
- अशोक के शासनकाल में तृतीय बौद्ध संगति किस नगर में आयोजित की गई थी ? **—पाटलिपुत्र**
- महावीर जैन की मृत्यु किस नगर में हुई? **—पावापुरी**
- कनिष्क के शासनकाल में बौद्ध सभा किस नगर में आयोजित की गई थी? **—कश्मीर**
- महात्मा बुद्ध ने पहला धर्मचक्रप्रवर्तन किस स्थान पर दिया था **—सारनाथ**
- किस शासक ने द्वितीय बौद्ध सभा का आयोजन किया था **—कालाशोक**
- सुमेलित करें—

घटना		प्रतीक
जन्म	-	कमल
प्रथम प्रवचन	-	धर्मचक्रप्रवर्तन
महाबोधि	-	बोधि वृक्ष
त्याग	-	घोड़ा

- सुमेलित करें—

वाद		प्रवर्तक
अद्वैतवाद	-	शंकराचार्य
विशिष्ट द्वैतवाद	-	रामानुजाचार्य
द्वैतवाद	-	माधवाचार्य

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

द्वैताद्वैतवाद - निम्बार्काचार्य
शुद्धाद्वैतवाद - वल्लभाचार्य

- कश्मीर में कनिष्क के शासनकाल में आयोजित बौद्ध संगीति की अध्यक्षता की थी **—वसुमित्र**
- बराबर की गुफाओं का आश्रय के रूप में उपयोग किया था **—आजीविकों ने**
- भागवत धर्म के प्रवर्तक थे—**कृष्ण** (600 ई.पू. - वृष्णि कबीला)
- किस ग्रंथ में सर्वप्रथम देवकी पुत्र कृष्ण का वर्णन है? **—छांदोग्य उपनिषद्**
- 'मिलिन्दपन्हो' राजा मिलिन्द और किस बौद्ध भिक्षु के मध्य संवाद के रूप में है? **—नागसेन**
- नचिकेता और यम के बीच प्रसिद्ध संवाद उल्लिखित हैं **—कठोपनिषद् में**
- गौतम बुद्ध ने सर्वप्रथम अपना उपदेश दिया था **—सारनाथ में (धर्मचक्रप्रवर्तन)**
- बौद्ध ग्रंथों में उल्लिखित 'धर्म चक्र प्रवर्तन' है **—सारनाथ में दिया गया बुद्ध का प्रथम उपदेश**
- 'त्रिपिटक' क्या है **—बुद्ध के उपदेशों का संग्रह** (त्रिपिटक- विनयपिटक, सुत्तपिटक तथा अभिधम्म पिटक पाली भाषा में रचित बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है)
- चारों बौद्ध संगीतियों का सही कालक्रम है **—राजगृह, वैशाली, पाटलिपुत्र तथा कुंडलवन**
- एलोरा का गुहा मंदिर संबंधित है **—हिंदू, बौद्ध व जैन धर्म से**
- बुद्ध ने अपनी मृत्यु के पश्चात् बौद्ध संघ के नेतृत्व के लिए नामित किया था **—आनन्द को**
- गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था **—563 ई.पू. (लुम्बिनी ग्राम)**
- भारत का सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप है **—साँची स्तूप**
- गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण (प्राण त्यागना) हुआ था **—कुशीनगर**
- बुद्ध किस वंश से संबंधित थे? **—शाक्य वंश**
- त्रिपिटक किस धर्म का पवित्र ग्रंथ है **—बौद्ध धर्म**
- अशोक ने तृतीय बौद्ध परिषद कहां बुलायी थी? **—पाटलिपुत्र**
- अजंता की चित्रकारी का विषय वस्तु संबंधित है? **—बौद्ध धर्म से**
- अजंता की चित्रकारी में क्या निरूपित किया गया है? **—जातक कथाएं**
- तमिल का गौरव ग्रंथ 'जीवन चिंतामणि' किससे संबंधित है? **—जैन धर्म से**
- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर थे **—ऋषभदेव**

6. मौर्य-काल

महापद्मनंद मगध का सर्वाधिक शक्तिशाली नंद राजा था। महापद्मनंद के 8 उत्तराधिकारी हुए। इस वंश का अंतिम शासक धननंद था। अपने गुरु चाणक्य की सहायता से धननंद को पराजित कर जिस व्यक्ति ने मौर्य वंश की स्थापना की उसका नाम यूनानी लेखकों ने सैन्ड्रोकोट्स (सर्वप्रथम सर विलियम जोंस ने उस सैन्ड्रोकोट्स की पहचान चंद्रगुप्त मौर्य से की) बताया। विशाखदत्त कृत ''मुद्राराक्षस'' में चंद्रगुप्त मौर्य के लिए 'वृषल'' (निम्ल कुल) उपनाम का प्रयोग किया गया है, जबकि बौद्ध एवं जैन साहित्य के ग्रंथ उसे क्षत्रिय कुल में उत्पन्न बताते हैं। 305 ई. पू. में चन्द्रगुप्त ने पश्चिमोत्तर भारत में यूनानी शासक सैल्यूकस निकेटर को पराजित कर एरिया (हेरात), अराकोसिया (कंधार), जेड्रीसिया, पेरोपेनिसडाई (काबुल) के भू-भागों को अधिकृत कर विशाल भारतीय साम्राज्य की स्थापना की। बिन्दुसार (298 ई.-273 ई. पू.) चंद्रगुप्त मौर्य का पुत्र व उत्तराधिकारी था, जिसे यूनानी लेखक ''अमित्रोचेट्स'' कहते थे। बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था। जैन अनुश्रुति के अनुसार अशोक (273 ई. पू. - 232 ई. पू.) ने बिन्दुसार की इच्छा के विरुद्ध मगध का शासन अपने अधिकार में कर लिया था। राज्याभिषेक से पहले अशोक उज्जैन का राज्यपाल था। अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था। संसार के इतिहास में अशोक की प्रसिद्धि का कारण उसकी विजयें नहीं, अपितु ''धम्म'' है।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''मौर्य-काल''

- लोगों से सीधे संपर्क रखने वाला/सीधे बात करने वाला राजा कौन था? **—अशोक**
  (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-डी) परीक्षा, 1997)
- अशोक ने अपने सभी अभिलेखों में एकरूपता से किस प्राकृत भाषा का प्रयोग किया है? **—मगधी**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2000)
- बिन्दुसार किस वंश का एक शासक था? **—मौर्य वंश**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2000)
- सांची में स्थित विशालतम स्तूप किस काल का माना जा सकता है? **—मौर्य काल**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (कामर्शियल ऑडिट) परीक्षा, 2000)
- वह शासक कौन था, जिसने राजसिंहासन पर बैठने के लिए अपने पिता बिन्दुसार की हत्या की थी? **—अशोक**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2002)
- किस विदेशी यात्री ने भारत का दौरा सबसे पहले किया था? **—मेगस्थनीज**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2000)
- किस व्यक्ति का नाम ''देवनाम प्रियदर्शी'' भी था? **—मौर्य राजा अशोक**
  (स्नातक स्तर (PT) परीक्षा, 2003)
- चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रसिद्ध गुरु चाणक्य किस विद्या केंद्र से संबंधित थे? **—तक्षशिला**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2008)
- मगध के उत्थान के लिए कौन सा प्रथम शासक उत्तरदायी था? **—बिम्बिसार**
  (मैट्रिक स्तर (PT) परीक्षा, 2008)
- अशोक ने किस बौद्ध साधु से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म अपनाया था? **—उपगुप्त**
  (स्नातक स्तर (टियर-I) परीक्षा, 2010)
- चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा गया यूनानी राजदूत कौन था? **—मेगस्थनीज**
  (स्नातक स्तर (टियर-I) परीक्षा, 2011)
- प्राचीन भारत का प्रसिद्ध शासक कौन था, जिसने अपने जीवन के

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

अंतिम दिनों में जैन धर्म अपना लिया था? —**चन्द्रगुप्त**
(हायर सेकेण्डरी (10+2) स्तर परीक्षा, 2011)

- अशोक पर कलिंग युद्ध का प्रभाव कहां दिखायी देता है?
—शिलाओं पर उत्कीर्ण 13वें राज्यादेश
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- एशिया के कई भागों में बौद्ध सम्प्रदाय का प्रसार करने के लिए अशोक ने किसे नियुक्त किया था? —**धर्म महामात्र**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- किसने पहली बार भारत में सात जातियों का अस्तित्व का स्वीकार किया? —**मेगस्थनीज**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- इंडिका किसने लिखी है? —**मेगस्थनीज**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- किस वंश में कौटिल्य का वर्णन मिलता है? —**मौर्य**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- मौर्य वंश के तत्काल बाद किस वंश ने आकर मगध राज्य पर शासन किया? —**शुंग**
(संयुक्त हायर सेकण्डरी (10+2) स्तर परीक्षा, 2013)
- कलिंग के विरुद्ध अशोक के अभियान की जानकारी का मुख्य स्रोत क्या है? —**शिलालेख XIII**
(केन्द्रीय पुलिस संगठन (CPO) एस.आई.परीक्षा, 2013)
- कौन सा राजवंश मौर्य के बाद आया? —**शुंग**
(कांस्टेबिल (GD) भर्ती परीक्षा, 2013)
- हस्त लिपियों के मूल संस्थापक और कौटिल्य के अर्थशास्त्र के सम्पादक कौन थे? —**आर. शाम शास्त्री**
(संयुक्त हायर सेकेंडरी (10+2) स्तर परीक्षा, 2014)

विशिष्ट तथ्य : मौर्य साम्राज्य

- मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था। उसने मगध के नन्दवंशीय शासक घननन्द को मारकर अपनी सत्ता स्थापित की थी।
- मौर्य वंश की जानकारी के मुख्य स्रोतों में पुराण, कौटिल्य रचित अर्थशास्त्र, क्षेमेन्द्र की वृहत्कथामंजरी, विशाखदत्त की मुद्राराक्षस, सिंहली साहित्य दीपवंश तथा महावंश, मेगस्थनीज की इंडिका, अशोक के अभिलेख, रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख हैं।
- पुराणों के अनुसार मौर्यों ने कुल 137 वर्षों तक शासन किया।
- भारत में प्रचलित पहला सिक्का आहत सिक्का कहलाता है जिसका प्रयोग पांचवीं शताब्दी ई. पू. (बौद्ध युग से) से होने लगा। आहत सिक्के का व्यापक स्तर पर पहली बार प्रयोग मौर्य काल में किया गया। आहत सिक्कों पर वृक्ष, सूर्य, चन्द्रमा आदि जैसे प्रतीकों को अंकित किया जाता था। मौर्य काल में प्रचलित आहत सिक्का चाँदी का 'पण' (3/4 तोले के बराबर) था। इसके अलावा आहत सिक्कों में कार्षापण माषक व ककणी भी थे।
- मौर्य काल में लोहे का व्यापक प्रयोग आरंभ हो गया था। उत्तरी श्याम चमकीले मृद्भाण्ड (Northern Black Polished Ware, N.B.P.W.) का व्यापक पैमाने पर प्रयोग मौर्य काल में होने लगा।

राजनैतिक इतिहास

- मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था। वह भारत का प्रथम सम्राट था, जिसने भारत में राजनीतिक एकता का सूत्रपात किया।

चन्द्रगुप्त मौर्य

- यूनानी लेखकों यथा : स्ट्रेबो, एरियन व जस्टिन ने चन्द्रगुप्त मौर्य को अपने ग्रन्थों में सेन्ड्रोकोट्स, जबकि प्लुटार्क ने उसे एण्ड्रोकोट्स कहा है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के चन्द्रगुप्त नाम का उल्लेख रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में मिलता है।
- कौटिल्य या चाणक्य नामक ब्राह्मण की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने पंजाब प्रांत के यूनानी गवर्नर युडेमस तथा सिकंदर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को पराजित किया।
- चन्द्रगुप्त एवं सेल्युकस के बीच संधि हुई। इस संधि के परिणामस्वरूप चन्द्रगुप्त मौर्य को हेरात, कंधार तथा काबुल के प्रदेश प्राप्त हुए तथा उसकी शादी सेल्यूकस की पुत्री हेलेना से सम्पन्न हुई।
- मेगस्थनीज को दूत बनाकर सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पाटलिपुत्र में स्थूलभद्र के नेतृत्व में प्रथम जैन संगीति का आयोजन किया गया था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा बनवाया गया राजप्रासाद (महल) काफी प्रसिद्ध था। यूनानी लेखक एरियन ने उसके राजप्रासाद की तुलना सूसा व एकबतना के महलों से की है।
- जीवन के अन्तिम समय में श्रवणबेलगोला (मैसूर, कर्नाटक) में चन्द्रगिरि नामक पर्वत पर सल्लेखना पद्धति द्वारा अपने प्राणों का परित्याग कर दिया।

मेगस्थनीज

- मेगस्थनीज सेल्यूकस निकेटर का दूत बनकर चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था। वह सात वर्षों तक भारत में रहा।
- मेगस्थनीज ने "इण्डिका" नामक ग्रंथ लिखा, जो अप्राप्य है। किन्तु अन्य विदेशी लेखकों ने उसकी कृति का उदाहरण दिया है।
- मेगस्थनीज के अनुसार—
  1. भारत में 58 नदियां हैं।
  2. तोते बच्चों की तरह बोलते हैं।
  3. मगध की राजधानी पाटलिपुत्र को "पालिब्रोथा" कहा।
  4. भारत में दास प्रथा नहीं।
  5. भारतीय समाज 7 वर्ग में विभाजित है।—कृषक, शिकारी व पशुपालक, व्यापारी-शिल्पी, योद्धा, दार्शनिक, निरीक्षक तथा मंत्री।
  6. पाटलिपुत्र नगर का प्रशासन पांच-पांच सदस्यों वाली छः समितियों द्वारा संचालित किया जाता था।
  7. पाटलिपुत्र नगर 80 स्टेडिया (16 किमी.) लम्बा तथा 15 स्टेडिया (3 किमी.) चौड़ा था।
  8. कौटिल्य (अर्थशास्त्र) के नाम का उल्लेख नहीं किया गया।
- चाणक्य का मूल नाम विष्णुगुप्त था। इनके पिता का नाम चणक था। इन्हें भारत का मैकियावेली भी कहा जाता है।
- ये चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री तथा मुख्य सलाहकार थे। इनकी कृति अर्थशास्त्र है, जिसका विषय राजव्यवस्था है।
- पंद्रह अधिकरणों में विभाजित अर्थशास्त्र में राज्य के सात अंग बताये गये हैं—स्वामी (राजा), अमात्य (मंत्री), मित्र, सेना, कोष, दुर्ग तथा जनपद।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- पुराणों में उन्हें द्विजर्षभ (श्रेष्ठ ब्राह्मण) कहा गया है।
- अर्थशास्त्र अधिकरणों, प्रकरणों व श्लोकों में विभाजित है।
- अर्थशास्त्र मुख्यतः सूत्र के गद्य रूप में है।
- युद्ध के मामले में कौटिल्य ने नैतिकता को गौण माना है।

तथ्य : रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख (150 ई. के लगभग का) पहला अभिलेख है, जिसमें पहली बार संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है। इसी अभिलेख में चन्द्रगुप्त मौर्य के नाम का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख से मौर्य काल में निर्मित सुदर्शन झील के बारे में जानकारी मिलती है। सुदर्शन झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पुष्यमित्र वैश्य ने गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत में सिंचाई व्यवस्था हेतु करवाया था।

- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। बिन्दुसार ने अपने पिता के साम्राज्य को अक्षुण्ण बनाये रखा।
- यूनानी लेखक बिन्दुसार को अमित्रोचेड्स कहते थे, जिसका संस्कृत में मतलब 'अमित्रघात' (शत्रुओं का नाश करने वाला) बताया गया है
- चाणक्य कुछ समय के लिये बिन्दुसार का भी प्रधानमंत्री रहा था, इसके बाद खल्लाटक प्रधानमंत्री बना।
- बिन्दुसार की मृत्यु 273 ई. पू. में हुई।

अशोक (269 ई. पू.-232 ई. पू.)

- बिन्दुसार की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अशोक शासक बना।
- अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी था।
- अपने युवराज काल में अशोक तक्षशिला और अवंति का गवर्नर रह चुका था। शासक बनने के पहले वह उज्जैन का गवर्नर था।
- अशोक का शासनकाल भारतीय इतिहास का अत्यंत गौरवमयी काल था, क्योंकि उस समय में अशोक ने अपनी क्षमताओं से भारत को सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रदान की।
- अशोक की पत्नी यथा : असंधिमित्रा (अग्रमहिषी-पटरानी), कारूवाकी (इससे उत्पन्न पुत्र का नाम- तीवर था) थीं।
- अशोक के अभिलेखों में कारूवाकी व तीवर का उल्लेख मिलता है।
- अशोक की एक अन्य पत्नी का नाम नाग देवी था, जिससे उत्पन्न पुत्र-पुत्री का नाम महेन्द्र—संघमित्रा था।
- अशोक की दो पुत्रियां : संघमित्रा व चारूमती थीं। संघमित्रा भिक्षुणी बन गई थी, जबकि चारूमती की शादी नेपाल निवासी देवपाल से हुई थी।
- अशोक के अभिलेखों में उसे देवानांप्रिय (देवताओं का प्रिय) 'राजा' आदि उपाधियां दी गई हैं।
- मास्की व गुर्जरा लेखों में उसका नाम अशोक मिलता है।

कलिंग का युद्ध

- कलिंग का युद्ध अशोक ने अपने शासनकाल के आठवें वर्ष में किया था (261 ई. पू.)। कलिंग की राजधानी तोसली बनाई गई।
- इस समय कलिंग (उड़ीसा) का शासक कौन था, इस पर अशोक के अभिलेख मौन हैं। खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख के अनुसार, इस समय कलिंग नंदराज के द्वारा शासित था।
- इस युद्ध की विभीषिका को देखकर अशोक का मन द्रवित हो गया और उसने लगभग $1^1/_2$ वर्षों के उपरांत बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया।

अशोक कालीन प्रान्त व उनकी राजधानियां

उत्तरापथ की राजधानी	तक्षशिला
दक्षिणापथ की राजधानी	सुवर्णगिरि
अवन्ति पथ की राजधानी	उज्जैन
मध्य क्षेत्र की राजधानी	पाटलिपुत्र
कलिंग की राजधानी	तोसली

- अशोक अपने चचेरे भाई सुशील या सुमन के पुत्र न्यग्रोध के प्रवचन को सुनकर बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुआ था।
- अशोक को बौद्ध मत में उपगुप्त ने प्रशिक्षित किया।
- अशोक ने कश्मीर में वितस्ता नदी के किनारे 'श्रीनगर' नामक शहर की स्थापना की।
- अशोक को बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान करने के कारण 'दूसरा बुद्ध' भी कहा जाता है।
- अशोक बौद्ध धर्म के स्थविर शाखा का अनुयायी था।
- अशोक के जीवन एवं उसके नीति-निर्देशन की जानकारी उसके शिलालेखों से प्राप्त होती है?

(1) लघु शिलालेख—कुल 14 हैं (+4 बाद में भी मिले हैं)। लघु शिलालेख के प्राप्ति स्थल हैं—

पश्चिमोत्तर क्षेत्र	कंधार
राजस्थान	वैराट भाब्रु (जयपुर में)
मध्य प्रदेश	गुर्जरा तथा रूपनाथपुर से
उत्तर प्रदेश	अहरौरा
बिहार	सासाराम
कर्नाटक	गविमठ, पालकी गुवण्डु, ब्रह्मगिरि, जटिंग रामेश्वरम् व सिद्धपुर
आंध्र प्रदेश	मास्की, रजुलानंदा व येरागुण्डी से।

(2) वृहत शिलालेख भी दो प्रकार के हैं :

A. = श्रेणी में

B. = पृथक

A. = वृहद श्रेणी शिलालेखों की संख्या-14 है, लेकिन ये आठ स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

कालसी	देहरादून
धौली	पुरी (ओडिशा)
जौगढ़	गंजाम, (ओडिशा)
मानसेहरा	पाकिस्तान
शहबाजगढ़ी	पाकिस्तान
गिरनार	सौराष्ट्र गुजरात
सोपारा	महाराष्ट्र
येरागुण्डी	आंध्र प्रदेश के कुरनुल से

B वृहद पृथक शिलालेख धौली (उड़ीसा) व जौगढ़ (उड़ीसा) से मिले हैं।

- स्तम्भ लेख—ये अभिलेख भी दो प्रकार के हैं :

(i) सामान्य—सामान्य अभिलेखों की संख्या 07 है। ये 6 स्थलों से मिले हैं। ये स्थल हैं—रामपुरवा, लौरिया नन्दनगढ़, लौरिया अरराज, दिल्ली-टोपरा, मेरठ कौशाम्बी-I (प्रयाग)।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

(ii) स्मारकीय—स्मारकीय अभिलेख दो जगहों से मिले हैं—निग्लियासागर (नेपाल) तथा रूम्मिनदेई।

- संघभेद अभिलेख—संघभेद अभिलेख सांची, सारनाथ तथा कौशाम्बी-II से प्राप्त होते हैं।
- गुहालेख—गुहालेख बराबर की पहाड़ियों (बोधगया, बिहार) से प्राप्त होते हैं।
- अशोक के अभिलेखों में उत्कीर्ण ब्राह्मी लिपि को सबसे पहले जेम्स प्रिन्सेप (1837) ने पढ़ा था।
- अशोक के अभिलेखों के अनुसार, उसने अपने शासनकाल के 14वें वर्ष में कनकमुनी स्तूप (निग्लियासागर) के आकार को दुगुना कराया था (255 B.C.)।
- अपने शासनकाल के 21वें वर्ष अशोक ने लुम्बिनी की यात्रा की थी। लुम्बिनी में भू-राजस्व की दर को 1/6 से घटाकर 1/8 कर दिया।
- अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामेइक व ग्रीक भाषाओं में मिलते हैं।
- ब्राह्मी लिपि बांये से दांये लिखी जाती है, जबकि खरोष्ठी दाहिने से बांये।
- अशोक के सर्वाधिक अभिलेख प्राकृत भाषा में मिले हैं।
- अशोक के दूसरे वृहद शिलालेख से उसके सीमावर्ती शासकों चोल, पाण्ड्य, ताम्रपर्णी, सतीयपुत्र, केरलपुत्र व अन्तियोक की जानकारी मिलती है।
- अशोक के तृतीय वृहद शिलालेख से प्रादेशिक राजुक व युक्त के नियुक्ति की जानकारी मिलती है।
- धम्म महामात्र की नियुक्ति की जानकारी पांचवें वृहद शिलालेख से मिलती है।
- भाब्रु लेख में अशोक ने स्वयं को मगध का सम्राट कहा है।
- अशोक ने अपने 13वें वृहद शिलालेख में कलिंग विजय का वर्णन किया है। इसी शिलालेख में अशोक कुल पांच विदेशी राज्यों की चर्चा करता है।
- अशोक के बाद शासकों में दशरथ का नाम उल्लेखनीय है। उसने बिहार प्रांत के गया जिले में स्थित नागार्जुनी पहाड़ी पर आजीवक सम्प्रदाय के साधुओं के निवास के लिये तीन गुफाएं निर्मित कराई थीं। उसने अशोक की तरह ही 'देवानांपिय' की उपाधि धारण की थी।
- पुराणों के अनुसार मौर्य वंश का अन्तिम शासक वृहद्रथ था, जिसे बुद्धिहीन कहा गया है और जिसकी हत्या एक ब्राह्मण मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी और नये वंश, शुंग वंश की स्थापना की।

टिप्पणी :

- यूरोपीय इतिहास लेखक अशोक की तुलना रोमन सम्राट कान्स्टेनटाइन से करते हैं।
- अशोक को अकबर का पूर्वगामी कहा जाता है।
- अशोक को अभिलेख जारी करने की प्रेरणा फारस के शासक डेरीयस-I (दारा-I) से मिली थी।
- वर्ण व्यवस्था कठोर रूप लेकर मौर्य काल में जाति व्यवस्था में परिणत हो जाती है जिसका आधार जन्म था।
- मौर्य काल में ही सर्वप्रथम दासों को पहली बार कृषि संबंधी कार्यों में लगाया गया।
- दासों की स्थिति संतोषजनक थी। उन्हें सम्पत्ति रखने तथा बेचने का अधिकार प्राप्त था।
- मौर्य कालीन समाज में (अर्थशास्त्र के अनुसार) ब्राह्मण को सबसे ज्यादा सम्मान प्राप्त था। कौटिल्य ने शूद्रों को भी 'आर्य' कहा है।
- मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था पर कौटिल्य के अर्थशास्त्र, मेगस्थनीज की इण्डिका तथा विशाखदत्त के मुद्राराक्षस से व्यापक प्रकाश पड़ता था। मौर्यकाल में राज्य आर्थिक रूप से समृद्ध था। राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि, पशुपालन व व्यापार-वाणिज्य पर आधारित थी, जिनको सम्मिलित रूप से 'वार्ता' कहा जाता था। (वार्ता—वृति का साधन)।

मौर्यकालीन सिक्के

- सोने का सिक्का निष्क या सुवर्ण कहलाता था।
- चाँदी के सिक्के कार्षापण/धरण कहलाते थे।
- ताँबे के छोटे सिक्के काकणीं होते थे।
- इन सिक्कों पर स्वामित्व वाले चिह्न भी लगाये जाते थे।
- मौर्यकाल में ताम्रलिप्ति (पूर्वी तट) तथा भृगुकच्छ व सोपारा (पश्चिमी तट) महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह थे।

तथ्य

- मौर्यों का राजकीय चिह्न संभवतः मयूर था।
- मौर्यकाल में मुख्य धर्म वैदिक, जैन, बौद्ध व आजीवक (सम्प्रदाय) थे।
- कल्हण (राजतरंगिणी का लेखक) अशोक को कश्मीर का प्रथम शासक मानता है।
- मौर्य काल में साधारण जनता की भाषा पाली थी। ब्राह्मी लिपि सम्पूर्ण भारत में प्रचलित थी।
- मौर्य काल में संभवतः जनगणना के निमित्त एक विभाग भी था।
- भड़ौच पूर्व का सबसे बड़ा व्यापारिक केन्द्र था।
- उद्योग क्षेत्र की संस्थाएं—श्रेणी कहलाती थीं। जातक ग्रन्थों में 18 प्रकार के श्रेणियों की चर्चा है।
- मौर्य काल में तक्षशिला उच्च शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र था।
- कात्यायन ने अपने ग्रन्थ वार्तिका की रचना मौर्य काल में ही की। यह पाणिनी की अष्टाध्यायी के कठिन शब्दों का अर्थ बताने के लिए किया गया।
- अशोक के समय बुद्ध की मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं मिलता।
- मेगस्थनीज नदियों में गंगा को सबसे ज्यादा पवित्र बताता है।
- विशाखदत्त की रचना मुद्राराक्षस (संस्कृत रचना) प्रथम भारतीय जासूसी उपन्यास मानी जाती है।
- मौर्य शासकों ने कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया और अपने संरक्षण में कला व स्थापत्य को संरक्षण प्रदान किया।
- मौर्य सम्राट अशोक ने अनेक नगरों की स्थापना की। उसने कश्मीर में श्रीनगर व नेपाल में ललित पाटन की स्थापना कराई।
- पाटलिपुत्र के बारे में मेगस्थनीज कहता है कि इसका निर्माण समानान्तर चतुर्भुज के रूप में किया गया था? जो गंगा व सोन नदियों के संगम पर स्थित था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य का राजप्रासाद (महल) लकड़ी का बना था। चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार, मानो इस राजप्रासाद को देवदूतों ने बनाया हो।
- मौर्य काल में वास्तुकला के क्षेत्र में एक नवीन शैली का जन्मदाता अशोक था। अशोक ने भिक्षुओं के लिये पाषाणों को काटकर गुहाओं का निर्माण कराया। इनमें गया के निकट बराबर पहाड़ी की गुफाओं में सुदामा की गुफा (सबसे प्राचीन) सबसे प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में अशोक का अनुसरण उसके पौत्र दशरथ ने भी किया।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

दशरथ ने लोमष ऋषि (बराबर समूह की सबसे प्रसिद्ध गुफा) व नागार्जुनी समूह की गोपिका गुहा बनवाई।

- अशोक के स्तम्भ एक ही पत्थर से तराशकर (एकाश्मक) बनाये गये हैं।
- अशोक के स्तम्भ सपाट मिलते हैं।
- स्तम्भ शीर्षों में सारनाथ के स्तंभ का सिंह शीर्ष सर्वोत्कृष्ट है।
- बौद्ध परम्परा के अनुसार अशोक ने 84000 स्तूपों का निर्माण कराया था।

तथ्य :

- स्तूपों का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद से मिलता है।
- अशोक के स्तंभ एकाश्मक हैं, जिनके निर्माण में संभवतः चुनार के बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ है।
- इस काल के मूर्तिकला का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण चामरग्राहणी की यक्ष मूर्ति को माना जाता है।
- पत्थरों पर शीशे की तरह चमकदार पालिश लगाने की कला मौर्य कलाकारों ने अखामनियों से सीखी थी।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- सांची का स्तूप किस शासक ने बनवाया था? —**अशोक**
- कौटिल्य चाणक्य प्रधानमंत्री थे —**चंद्रगुप्त मौर्य के**
- चाणक्य के बचपन का नाम क्या था —**विष्णु गुप्त**
- वह एकमात्र स्तंभ, जिसमें अशोक ने स्वयं को मगध का सम्राट बताया है —**भाबु स्तंभ**
- अशोक के शिलालेखों में प्रयुक्त भाषा है —**प्राकृत**
- मेगस्थनीज ने भारत को कितनी श्रेणियों में विभाजित किया है? —**सात**
- मेगस्थनीज की पुस्तक का नाम है —**इंडिका**
- मौर्य काल में शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र था —**तक्षशिला**
- अशोक ने बौद्ध होते हुए भी हिंदू धर्म में आस्था नहीं छोड़ी, इसका प्रमाण है —**देवानामप्रिय की उपाधि**
- प्रसिद्ध यूनानी राजदूत मेगस्थनीज भारत में किसके दरबार में आए थे? —**चंद्रगुप्त मौर्य**
- विशाखदत्त के प्राचीन नाटक मुद्राराक्षस का विषयवस्तु है —**चंद्रगुप्त मौर्य के समय में राजदरबार की दुरभिसंधियों के विषय में**
- वह कौन सा शासक है जिसका नाम 'देवानाम पियदशी' भी था? —**मौर्य राजा अशोक**
- कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' संबंधित है —**राजनीति से**
- 'मुद्राराक्षस' नामक पुस्तक का लेखक था —**विशाख दत्त**
- वर्तमान नगर पालिका प्रशासन का कौन सा कार्य मौर्यकाल में भी प्रचलित था? —**जन्म एवं मृत्यु का पंजीकरण**
- किस एक राज्यादेश में 'अशोक' के व्यक्तिगत नाम का उल्लेख है? —**मास्की अभिलेख**
- कौटिल्य महामंत्री थे —**चंद्रगुप्त मौर्य के**
- साँची का स्तूप बनवाया था —**अशोक ने**
- अशोक के शिलालेख को पढ़ने वाला प्रथम अंग्रेज था —**जेम्स प्रिन्सेप (1837)**
- सैण्ड्रोकोट्टस से चंद्रगुप्त मौर्य की पहचान की थी —**विलियम जोन्स के**
- अंतिम मौर्य सम्राट था —**वृहद्रथ**

7. मौर्योत्तर काल

अंतिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ की हत्या करके, उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 184 ई. पू. में शुंग राजवंश की स्थापना की थी। शुंग वंश (184 ई. पू.-75 ई. पू.) के अंतिम सम्राट देवभूति की हत्या करके उसके सचिव वासुदेव ने 75 ई. पू. में कण्व राजवंश (75 ई. पू. से 30 ई. पू.) की नींव डाली। वासुदेव पाटलिपुत्र के कण्व वंश का प्रवर्तक था। कण्व वंश के अंतिम शासक सुशर्मा को सातवाहन वंश के प्रवर्तक सिमुक ने पदच्युत कर दिया था। आंध्र सातवाहन वंश की स्थापना सिमुक ने की थी। सातवाहन वंश के संबंध में विस्तृत जानकारी मत्स्य व वायुपुराण में उपलब्ध है। यज्ञश्री शातकर्णी सातवाहन वंश का अंतिम महान शासक था। उत्तर-पश्चिम से पश्चिमी विदेशियों का आक्रमण मौर्योत्तर काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना थी। इनमें सबसे पहले आक्रमणकारी बैक्ट्रिया के ग्रीक (जिन्हें यवन के नाम से जाना जाता है) थे। यूनानियों के बाद मध्य एशिया के शकों ने भारत पर आक्रमण किया तथा उन्होंने यूनानियों से अधिक भाग पर कब्जा किया। भारत के शक राजा अपने आप को "क्षत्रप" कहते थे। पश्चिमोत्तर भारत में शकों के आधिपत्य के बाद पार्थियाई (पार्थियाई या पहलव मध्य एशिया में ईरान से आए थे) लोगों का आधिपत्य स्थापित हुआ। पहलव के बाद कुषाणों (कुषाण मध्य एशिया में पश्चिमी चीन के यूची जाति के थे) का भारत में आगमन हुआ। मौर्योत्तर कालीन जो भारतीय राजवंश प्रसिद्ध हुए, वे हैं—शुंग वंश, कण्व वंश, आंध्र-सातवाहन वंश, आभीर वंश, इक्ष्वाकु वंश, चुटुशातकर्णी वंश, कलिंग का चेदि वंश तथा वाकाटक वंश।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में "मौर्योत्तर काल"

- किस व्यक्ति को "द्वितीय अशोक" कहा जाता है? —**कनिष्क**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- भारतीयों के लिए महान् "सिल्क मार्ग" किसने आरंभ कराया? —**कनिष्क**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- किस वंश के शासकों ने ब्राह्मणों तथा बौद्ध-भिक्षुओं को कर मुक्त ग्राम देने की प्रथा प्रारंभ की? —**सातवाहन**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- भारत सरकार द्वारा प्रयोग में आने वाला शक-संवत् किसने प्रारंभ किया था? —**कनिष्क**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- भारतीय रंगमंच में यवनिका (पर्दा) का शुभारंभ किसने किया? —**यूनानियों ने**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- गांधार चित्रकला के प्रमुख संरक्षक थे? —**शक एवं कुषाण**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (कामर्शियल ऑडिट) परीक्षा, 2000)

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- तक्षशिला के प्रसिद्ध स्थल के रूप में होने का क्या कारण था? **—गांधार कला**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- भारत में प्रथम स्वर्ण मुद्राएं किसने चलाई? **—यूनानी**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- भारतीय और यूनानी कला के अभिरक्षणों को समन्वित करने वाली कला शैली का क्या नाम है? **—गांधार**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- यूनानी-रोमन कला को कहां स्थान प्राप्त हुआ है? **—गांधार**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- चरक किसके राज चिकित्सक थे? **—कनिष्क**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- वह महानतम कुषाण नेता कौन था, जो बौद्ध बन गया था? **—कनिष्क**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- श्रीलंका पर विजय प्राप्त करने वाला चोल वंश का सबसे प्रतापी राजा कौन था? **—राजराज-प्रथम**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- सातवाहनों ने पहले स्थानीय अधिकारियों के रूप में पहले किसके यहां काम किया? **—मौर्यों के यहां**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी करने वाले कौन थे? **—हिन्द-यूनानी**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- ई. सन् 78 से प्रारंभ होने वाला शक संवत् का संस्थापक कौन था **—कनिष्क (C.P.O. परीक्षा, 2003)**
- चित्रकला में गांधार शैली का सूत्रपात किसके द्वारा किया गया था? **—महायान सम्प्रदाय**
(C.P.O. परीक्षा, 2003)
- गांधार कला किस काल में विकसित हुई थी? **—कुषाण काल में**
(C.P.O. परीक्षा, 2003)
- चरक किसके दरबार के चिकित्सक थे? **—कनिष्क**
(कर सहायक, परीक्षा, 2005)
- कनिष्क के शासनकाल में रहने वाले मुख्य साहित्यकार कौन थे? **—वसुमित्र और अश्व घोष**
(स्टेनोग्राफर (ग्रेड-डी) परीक्षा, 2005)
- कला की गांधार शैली किसके शासनकाल में पनपी थी? **—कनिष्क**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2006)
- चौथी बौद्ध परिषद का आयोजन किसने किया था? **—कनिष्क**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2006)
- कनिष्क की राजधानी कहां थी? **—पुरुषपुर**
(संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2007)
- शक संवत् किसने और कब शुरू किया था? **—कनिष्क ने 78 ईस्वी में**
(संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)
- चरक किस राजा के दरबार में प्रसिद्ध चिकित्सक (आयुर्वेदाचार्य) थे? **—कनिष्क**
(डाटा एण्ट्री ऑपरेटर (E.E.O.) परीक्षा, 2009)
- कुषाण काल में भारतीय और ग्रीक शैली के मिश्रण से विकसित कला विद्यालय का किस नाम से जाना जाता है?**—गांधार कला**
(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)
- गंधर्व कला विद्यालय और किस नाम से जाना जाता है? **—ग्रीक-रोमन बौद्ध कला**
(संयुक्त स्नातक स्तरीय प्रा. परीक्षा, 2013)

विशिष्ट तथ्य ''मौर्योत्तर काल''

पूर्व गुप्तकाल अथवा मौर्योत्तर काल

- मौर्य वंश के अन्तिम शासक वृहद्रथ की हत्या पुष्यमित्र शुंग नामक ब्राह्मण ने कर दी, फलतः मौर्य साम्राज्य के पतन के साथ ही भारत की राजनैतिक एकता विलुप्त हो गई। अतएव भारत की उत्तरी-पश्चिमी सीमा से लड़ाकू जातियां भारत में प्रविष्ट होने लगीं।
- शुंग वंश का संस्थापक पुष्यमित्र था, जिसने अन्तिम मौर्य शासक वृहद्रथ की हत्या कर मौर्य साम्राज्य के क्षेत्रों पर अपने आधिपत्य की स्थापना की।
- पुष्यमित्र के पुरोहित का नाम पतंजलि (पाणिनि के अष्टाध्यायी पर महाभाष्य की रचना की) था।
- पुष्यमित्र के समय उसका पुत्र अग्निमित्र विदिशा का राज्यपाल था, जबकि घनदेव अयोध्या का राज्यपाल था।
- पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ कराये।
- वस्तुतः पुष्यमित्र शुंग के समय में ही सांची के स्तूप का आकार दुगुना कराया गया था।
- पुष्यमित्र के शासनकाल की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना यवनों का भारत पर आक्रमण था। कालिदास के नाटक माल्विकाग्निमित्रम् के अनुसार पुष्यमित्र शुंग के पौत्र (अग्निमित्र का पुत्र) वसुमित्र ने यवनों को (संभवतः सिन्धु नदी के तट पर) परास्त किया।
- शुंग काल में ही पहला स्मृति ग्रन्थ मनुस्मृति की रचना की गई।
- शुंग वंशीय नौवें शासक भागभद्र के दरबार में एण्टियाल्किडस का दूत बनकर हेलियोडोरस भारत आया था। यहां आकर उसने भागवत धर्म ग्रहण कर लिया था तथा विदिशा (बेसनगर) में गरुड़ स्तम्भ की स्थापना कर भागवत (विष्णु) की पूजा की थी।
- शुंग काल में संस्कृत भाषा व ब्राह्मण व्यवस्था का पुनरुत्थान हुआ।
- कण्व वंश की स्थापना वासुदेव ने की थी।
- इस वंश के अंतिम शासक सुशर्मा की हत्या आंध्र जातीय भृत्य सिमुक (सिन्धुक) ने कर दी।
- सातवाहन वंश का संस्थापक 'सिमुक' था जिसने कण्व वंश के अन्तिम शासक सुशर्मा की हत्या कर अपने वंश की स्थापना की।
- सातवाहन सत्ता का पुनरुद्धार गौतमीपुत्र शातकर्णी के समय में हुआ। पुराणों के अनुसार, गौतमी पुत्र शातकर्णी इस वंश का 23वां शासक था।
- यज्ञश्री शातकर्णी सातवाहन वंश का अन्तिम शक्तिशाली शासक था, इसके सिक्कों पर मछली, जहाज और शंख का चित्र अंकित है।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

भारत पर आक्रमण करने वाले विदेशी

मौर्योत्तर काल में भारतीय क्षेत्रों पर यूनानी, शक, पहलव तथा कुषाणों का हमला हुआ।

यूनानी आक्रमण

- भारत पर सर्वप्रथम आक्रमण यूनानियों (इण्डो-ग्रीक या बैक्ट्रियाई) का हुआ।
- यूनानियों द्वारा किये गये आक्रमण का नेतृत्वकर्ता डिमेट्रियस प्रथम था (जिसने 220-175 ई. पू.) में भारत पर आक्रमण किया। इसने शाकल (पाकिस्तान स्यालकोट) को अपनी राजधानी बनाई।
- इतिहासकार जस्टिन डिमैट्रियस को भारत का राजा बताता है।
- डिमैट्रियस का उत्तराधिकारी मिलिन्द या मिनांडर एक महान शासक था। भारत आने के बाद मिनांडर ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। उसने अपने समकालीन विद्वान नागसेन (या नागार्जुन) से बौद्ध धर्म के विषय में संवाद किये।
- पाली साहित्य मिलिन्दपन्हो में राजा मिलिन्द व नागसेन के मध्य हुए वार्तालाप का जिक्र है। (मिलिन्दपन्हो-राजा मिलिन्द के प्रश्न)।
- मिनांडर की मुद्राएं चांदी व तांबे की हैं। हिन्द-यूनानी शासकों में सबसे ज्यादा सिक्के मिनांडर के ही हैं।
- इस वंश के प्रसिद्ध शासक एन्टियालकिड्स ने अपने शासनकाल के 14 वें वर्ष विदिशा स्थित शुंग वंशीय नौवें शासक भागभद्र के दरबार में अपना दूत बनाकर हेलियोडोरस को भेजा था।
- हेलियोडोरस ने भारत आकर भागवत धर्म ग्रहण कर लिया।

टिप्पणी :

- यूनानियों के आक्रमण से भारत पर यूनानी प्रभाव दिखाई पड़ता है।
- भारतीय ज्योतिष पर यूनानी प्रभाव दिखाई देता है।
- भारतीयों ने यूनानियों से सांचे में ढालकर मुद्रा बनाने की कला सीखी।
- यूनानी शासकों के लेखों में खरोष्टी व यूनानी लिपि मिलती है।
- भारतीय रंगमंच पर भी यूनानी प्रभाव दिखाई देता है।
- चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी यूनानी प्रभाव है।
- गांधार व मथुरा कला शैली यूनानी प्रभाव से भरे पड़े हैं।
- भारतीयों ने अनेक यूनानी शब्दों-कलम, पुस्तक इत्यादि को ग्रहण किया।

शक

- हिन्द यवनों के बाद मौर्योत्तर काल में भारतीय क्षेत्रों पर हमला करने वाले शक थे।
- भारतीय साहित्य में शकों के प्रदेश को 'शकद्वीप' कहा गया है।

शक

- उत्तरी शक
  - तक्षशिला
  - मथुरा
- पश्चिमी शक
  - नासिक
  - उज्जैन

- भारत में शक पूर्वी ईरान के क्षेत्रों से होकर आये। उन्होंने पश्चिमोत्तर प्रदेश से यवन-सत्ता को समाप्त करके उत्तरापथ व अन्य क्षेत्रों पर अपने प्रभुत्व की स्थापना की।
- शक नरेशों के भारतीय प्रदेशों के शासक 'क्षत्रप' कहे जाते थे।
- पहलव मूलतः पार्थिया के निवासी थे। पार्थियन साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक—मिथ्रदात प्रथम था।
- इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा—गोण्डोफर्नीज था। उसके शासनकाल का एक अभिलेख 'तख्ते बही' (पेशावर) से प्राप्त हुआ है।
- गोण्डोफर्नीज की राजधानी तक्षशिला थी।
- पहलव राजाओं के सिक्कों पर "धार्मिय" (धार्मिक) उपाधि उत्कीर्ण है।
- गोण्डोफर्नीज के शासनकाल में ही ईसाई धर्म प्रचारक सेन्ट टॉमस का दल भारत आया था।

कुषाण राजवंश

- कुषाण वंश का राजनैतिक इतिहास चीनी स्रोतों से प्राप्त होता है।
- इस वंश का शासक विम कडफिसेस ने ही भारत में सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्के प्रचलित कराये थे।
- कुषाण यूची जाति की एक शाखा थे।

कनिष्क

- कुषाण राजवंश का सबसे महान शासक कनिष्क था। उसके लगभग 12 अभिलेख तथा बहुसंख्य स्वर्ण मुद्राएं मिली हैं।
- कनिष्क ने शक संवत् को चलाया। यही उसके राज्यारोहण की तिथि है।
- कनिष्क की दो राजधानियां थीं—पेशावर तथा मथुरा।
- चौथी बौद्ध संगीति कनिष्क के शासनकाल में हुई थी। कश्मीर में कनिष्क ने कनिष्कपुर नामक नगर की स्थापना की थी।
- कनिष्क ने मध्य एशिया में काशगर, यारकन्द, खेतान आदि प्रदेशों पर अपने आधिपत्य की स्थापना कर पहली बार एक अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्य की स्थापना की थी।
- कनिष्क शासनकाल में भारत का व्यापारिक संबंध मध्य एशिया व पश्चिमी विश्व के साथ बना।
- अपने प्रारंभिक वर्षों में ही कनिष्क बौद्ध हो गया था। उसने पेशावर में चैत्य का निर्माण कराया था।
- चीन के राजा पान-चाऊ ने कनिष्क को परास्त किया था।
- अश्वघोष कनिष्क का राजकवि था। अश्वघोष की रचनाएं—सौन्दरानन्द, बुद्धचरित तथा सारिपुत्र प्रकरण।
- कनिष्क के अभिलेखों में उसे देवपुत्र-षाहि-षाहानुषाहि कहा गया है।
- कनिष्क के राजवैद्य चरक थे (चरक संहिता के रचनाकार)।
- कनिष्क ने बौद्ध धर्म के महायान शाखा को राजाश्रय प्रदान किया था।
- कनिष्क के शासनकाल में कला के क्षेत्र में दो स्वतंत्र शैलियों का विकास हुआ—(i) गांधार कला शैली, (ii) मथुरा कला शैली।
- यूनानी कला शैली के प्रभाव से गांधार कला शैली का जन्म हुआ (कनिष्क के काल में)।
- तपस्यारत बुद्ध का एक दृश्य (जिसमें उपवास के कारण उनका शरीर निर्बल हो गया है) गांधार कला का सर्वोत्तम उदाहरण है।
- मथुरा कला शैली की मूर्तियां लाल-बलुआ पत्थर की हैं।
- मथुरा कला आदर्शवादी है।
- मथुरा शैली में ही बुद्ध की संभवतः सर्वप्रथम मूर्तियां बननी शुरू हुई।
- सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कुषाणों ने चलाये।
- इण्डो-ग्रीकों ने सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलाये।
- सातवाहनों ने सीसे के सिक्के चलाये।
- ईसा की पहली सदी में (45-49 ई.) मिस्र के नाविक हिप्पालस के द्वारा अरब सागर में चलने वाले मानसून की जानकारी देने से समुद्री यात्रा सरल हो गई थी।
- मौर्योत्तर काल में आहत मुद्राओं का प्रचलन बंद हो गया।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर और तथ्य

- शक संवत् कब प्रारंभ किया गया? —**78 ई.**
- कुषाण शासक कनिष्क का राज्याभिषेक कब हुआ? —**78 ई.**
- विक्रम संवत् कब प्रारंभ हुआ? —**57 ई. पू.**
- गांधार कला शैली एक संश्लेषण है —**भारतीय तथा यूनानी कला का**
- मिलिन्दपन्हो है —**पालि ग्रंथ**
- हेलियोदोरस का बेसनगर स्तंभ संबंधित है —**वसुदेव से**
- राजा खारवेल का नाम जुड़ा है —**हाथी गुम्फा अभिलेख के साथ**
- प्राचीन काल में भारत पर आक्रमण के संदर्भ में कौन सा सही कालानुक्रम है? —**यूनानी-शक-कुषाण**
- कुषाण काल में सबसे अधिक विकास हुआ था —**वास्तुकला का**
- कनिष्क के समकालीन थे —**नागार्जुन, अश्वघोष व वसुमित्र**
- भारत में सर्वप्रथम स्वर्ण मुद्राएं चलाने वाले शासक थे —**भारतीय युनानी**
- किस वंश के शासकों ने अग्रहार (कर मुक्त ग्राम दान की प्रथा शुरू की? —**सातवाहन**
- भारतीयों के लिए महान 'सिल्क मार्ग' किसने प्रारंभ कराया? —**कनिष्क**
- कला की गांधार शैली किस समय में फली-फूली? —**कुषाणों के समय**
- जो कला शैली भारतीय और ग्रीक (यूनानी) कला शैली का मिश्रण है, उसे कहते हैं? —**गांधार शैली**
- भारत सरकार द्वारा प्रयोग किये जाने वाले शक संवत् का प्रयोग किया था —**कनिष्क ने**
- प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में 'यवन प्रिय' शब्द द्योतक था —**काली मिर्च का**
- प्राचीन भारत में नियमित रूप से सोने के सिक्के चलाए थे —**कुषाण शासकों ने**

8. गुप्त काल

मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात् प्राचीन भारत में गुप्तों ने ही विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की। गुप्तों की वंशावली के संदर्भ में हमें महत्त्वपूर्ण जानकारी समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति, कुमारगुप्त के भिलसद स्तंभलेख तथा स्कंदगुप्त के भीतरी स्तंभलेख से प्राप्त होती है। इन अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर गुप्तों के आदि पुरुष का नाम श्रीगुप्त था, उसका उत्तराधिकारी व पुत्र घटोत्कच था। परन्तु, गुप्त वंशावली में सबसे पहला प्रतापी शासक चंद्रगुप्त प्रथम (319 ई.-335 ई.) था। इसने "महाराजाधिराज" की उपाधि ग्रहण की थी। समुद्रगुप्त (335 ई. - 375 ई.) गुप्त वंश का एक महान योद्धा तथा कुशल सेनापति था, इसी कारण उसे "भारत का नेपोलियन" कहा जाता है। चंद्रगुप्त द्वितीय (380-412 ई.) "विक्रमादित्य" के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य अपने उत्कर्ष पर पहुंच गया था। उसका शासन काल प्राचीन भारतीय इतिहास में "स्वर्णयुग" के नाम से जाना जाता है। चंद्रगुप्त द्वितीय "विक्रमादित्य" के पश्चात् उसका पुत्र कुमारगुप्त प्रथम (413 ई. से 455 ई.) सिंहासनारूढ़ हुआ। गुप्त शासकों में सर्वाधिक अभिलेख कुमारगुप्त के ही प्राप्त हुए हैं। उसी के शासनकाल में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। 455 ई. में कुमारगुप्त की मृत्यु के पश्चात् उसका प्रतापी पुत्र स्कंदगुप्त (455 ई. से 467 ई.) सिंहासनारूढ़ हुआ। कुमारगुप्त तृतीय, गुप्त वंश का अंतिम शासक था। गुप्त साम्राज्य के पतन में हूणों का आक्रमण एक प्रधान कारण था। गुप्तों के पतन के साथ ही नवीन राजवंशों (बल्लभी के मैत्रेय, कन्नौज के मौखरि, थानेश्वर में वर्धन) का उदय हुआ।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में "गुप्त काल"

- कवि कालिदास किसके राजकवि थे?—**चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- गुप्त युग का प्रवर्तक कौन था? —**श्रीगुप्त**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- मुद्राराक्षस के लेखक कौन थे? —**विशाखदत्त**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- शून्य की खोज किसने की? —**आर्यभट्ट**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- गुप्त शासन के दौरान ऐसा व्यक्ति कौन था, जो एक महान खगोल-विज्ञानी तथा गणितज्ञ था? —**आर्यभट्ट**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- 'गुप्त' राजा जिसने 'विक्रमादित्य' की पदवी ग्रहण की थी, वह था? —**चन्द्रगुप्त द्वितीय**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- गुप्तवंश का वह राजा कौन था, जिसने हूणों को भारत पर आक्रमण करने से रोका? —**स्कंद गुप्त**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- किसको अपनी विजयों के कारण "भारत का नेपोलियन" कहा जाता है? —**समुद्रगुप्त**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- "मृच्छकटिकम्" के रचनाकार कौन हैं? —**शूद्रक**
  (सहायक निरीक्षक नियंत्रक परीक्षा, 2003)
- "भारतीय नेपोलियन" की उपाधि किसे दी गई है? —**समुद्रगुप्त**
  (C.P.O. परीक्षा, 2003)
- "उत्तर रामचरित" नाटक किसने लिखा है? —**भवभूति**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2005)
- आयुर्वेद के वैद्य "चिकित्सा का भगवान" किसे मानते हैं? —**धनवंतरि**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2005)
- गुप्त वंश का प्रथम महान सम्राट कौन था? —**चन्द्रगुप्त**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2005)
- संख्या प्रणाली 'शून्य' का आविष्कार किसने किया था? —**आर्यभट्ट (कर सहायक परीक्षा, 2005)**
- भारतीय संस्कृति का 'स्वर्ण युग' था? —**गुप्तकाल**
  (लोअर डिवीजन क्लर्क, 2005)
- हरिषेण किस राजा का राजकवि था? —**समुद्रगुप्त**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- वह शासक कौन था जो विक्रमादित्य के नाम से जाना जाता था? **—चन्द्रगुप्त द्वितीय**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2006)
- प्राचीन भारत के विख्यात चिकित्सक धन्वन्तरि ने अपना परामर्श किसके दरबार में दिया था? **—चन्द्रगुप्त द्वितीय**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2006)
- फाह्यान ने भारत की यात्रा किस काल में किया था? **—गुप्त काल में**
(सेक्शन ऑफीसर्स (कामर्शियल ऑडिट) परीक्षा, 2006)
- आर्यभट्ट और वाराहमिहिर के सुविख्यात नाम किसके युग के साथ संबंधित है? **—गुप्त वंश**
(सेक्शन ऑफीसर्स (कामर्शियल ऑडिट) परीक्षा, 2006)
- प्रसिद्ध काव्य 'गीतगोविंद' के रचयिता कौन हैं? **—जयदेव**
(सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2006)
- ऋतुसंहार के लेखक कौन हैं? **—कालिदास**
(C.P.O. परीक्षा, 2008)
- चीनी यात्री फाह्यान किस गुप्त शासक के शासनकाल के दौरान भारत आया था? **—चंद्रगुप्त द्वितीय**
(C.P.O. परीक्षा,, 2008)
- इलाहाबाद स्तंभ के शिलालेख में किसकी उपलब्धियां वर्णित है? **—समुद्रगुप्त**
(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)
- गुप्तवंश के किस राजा को ''भारत का नेपोलियन'' कहा जाता है? **—समुद्रगुप्त**
(कर सहायक परीक्षा, 2008)
- अपनी प्रसार की नीतियों के कारण 'भारत का नेपोलियन' कहलाने वाला राजा है? **—समुद्रगुप्त**
(स्टेनोग्राफर्स (ग्रेड सी एवं डी) परीक्षा, 2010)
- गीतगोविंद का लेखक कौन था? **—जयदेव**
(संयुक्त हॉयर सेकेण्डरी स्तर परीक्षा, 2010)
- प्राचीन सिक्कों पर वीणा बजाते हुए दिखाया गया हिन्दू राजा कौन था? **—समुद्रगुप्त**
(संयुक्त हॉयर सेकेण्डरी स्तर परीक्षा, 2010)
- भारत का नेपोलियन किसे कहा गया है? **—समुद्र गुप्त**
(मल्टी टॉस्किंग स्टॉफ (MTS) परीक्षा, 2014)
- गुप्त साम्राज्य का संस्थापक किसे माना जाता है **—श्रीगुप्त**
(संयुक्त स्नातक स्तर (PT) परीक्षा, 2015)

विशिष्ट तथ्य ''गुप्त काल''

- गुप्त काल 319 से 550 ई. तक था।
- गुप्त काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग (Golden Age) कहा जाता है। मौर्यों के पतन के बाद नष्ट हुई राजनैतिक एकता को गुप्त शासकों ने पुनः अर्जित कर लगभग सम्पूर्ण भारत को एक राजनैतिक क्षेत्र के अधीन कर शक्तिशाली विदेशी आक्रांताओं का सफलतापूर्वक सामना करके आर्थिक, सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्र में उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया।
- चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक था।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने 319 ई. में एक नया संवत 'गुप्त संवत' चलाया।
- चन्द्रगुप्त प्रथम के शासनकाल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना गुप्तों तथा लिच्छवियों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध की स्थापना थी। उसने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।
- कुमारदेवी से विवाह के बाद उसने राजा-रानी प्रकार या चन्द्रगुप्त-कुमारदेवी प्रकार के सिक्के जारी किये।
- गुप्त वंश में सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त प्रथम ने ही रजत मुद्राओं का प्रचलन कराया।
- समुद्रगुप्त का शासनकाल 335 से 375 ई. तक था।
- समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त प्रथम का पुत्र था, इसने लिच्छवयः दौहित्र (लिच्छवि कन्या से उत्पन्न) की उपाधि धारण की।
- समुद्रगुप्त एक साम्राज्यवादी शासक था। समुद्रगुप्त के इतिहास को जानने का सर्वप्रमुख स्रोत इलाहाबाद स्तंभ लेख (या प्रयाग प्रशस्ति) है। प्रयाग प्रशस्ति की रचना उसके सन्धि-विग्रहिक (युद्ध व सन्धि का मंत्री) हरिषेण ने की थी।
- प्रयाग प्रशस्ति के प्रारंभ में अशोक (मौर्य शासक) का लेख अंकित है। तत्पश्चात समुद्रगुप्त का लेख अंकित है। यह ब्राह्मी लिपि तथा विशुद्ध संस्कृत भाषा में (चम्पू शैली में) लिखा गया है। इस शैली को काव्य कहा गया है। मध्यकाल में मुगल शासक अकबर ने इसे कौशाम्बी से मंगाकर इलाहाबाद के किले में सुरक्षित करा दिया। इसमें अकबर के दरबारी बीरबल का भी लेख मिलता है।
- समुद्रगुप्त के एरण अभिलेख (मध्य प्रदेश के सागर जिले में एरण नामक स्थल से) से पता चलता है कि उसकी पत्नी का नाम दत्त देवी था।
- बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार समुद्रगुप्त कवि, संगीतज्ञ और विद्या का उदार संरक्षक था, उसने प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुबन्धु को संरक्षण प्रदान किया था।
- समुद्रगुप्त ने वैदिक धर्म के अनुसार शासन किया, उसे 'धर्म की प्राचीर' कहा गया है।
- समुद्रगुप्त की सेवा में श्रीलंका के राजा मेघवर्ण ने उपहार भेजे तथा गया (बिहार) में मठ बनवाने की अनुमति चाही थी।
- इतिहासकार विन्सेंट आर्थर स्मिथ ने समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' कहा है।
- समुद्रगुप्त के सिक्कों पर उसे वीणा बजाते दिखाया गया है।
- उसने 'अश्वमेध प्राक्रमांक' की उपाधि धारण की थी।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का शासनकाल 380 से 414 ई. तक था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय समुद्रगुप्त एवं दत्त देवी से उत्पन्न पुत्र था।
- यह गुप्त राजवंश का शक्तिशाली एवं महत्त्वपूर्ण शासक था। चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में गुप्त साम्राज्य उत्कर्ष पर जा पहुंचा।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपने पुत्र कुमारगुप्त प्रथम का विवाह कदम्ब देश में किया।
- मेहरौली स्तंभ लेख (दिल्ली में कुतुबमीनार के निकट) का संबंध चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य से स्थापित किया जाता है।
- चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य ने अश्वमेध यज्ञ किया था।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य

उपाधियाँ	अन्य नाम	चीनी यात्री	दरबार में
विक्रमांङ्क, विक्रमादित्य, परमभागवत् आदि।	देव, देवश्री, देवराज, देवगुप्त	फाह्यान का आगमन इसी के समय	नौ रत्नों का निवास

- चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य ने सात प्रकार के सिक्के जारी किये थे। उसके सिंहहंता प्रकार के सिक्कों से पता चलता है कि उसने शकों को पराजित किया था।
- उसके उदयगिरि गुहा लेख के अनुसार चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का उद्देश्य सम्पूर्ण पृथ्वी को जीतना था।
- उसके सांची अभिलेख में आम्रकार्दव नामक (बौद्ध) सैनिक पदाधिकारी का उल्लेख है, जो सैकड़ों युद्धों का विजेता था।
- चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी, शकों पर विजय के बाद चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य ने अपनी दूसरी राजधानी उज्जैन में स्थापित की।
- चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य ने 40 वर्षों तक शासन किया।
- मेहरौली लेख के अनुसार, चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' ने विष्णुपद पर्वत पर विष्णुध्वज की स्थापना करवाई थी।
- कालिदास को भारत का शेक्सपियर कहा जाता है। चन्द्रगुप्त-II ने कालिदास को अपना दूत बनाकर, कुन्तल नरेश के दरबार में भेजा था।
- चन्द्रगुप्त-II के विजयों का वर्णन मेहरौली लौह स्तंभ लेख में मिलता है।
- राजशेखर की रचना काव्यमीमांसा है।
- फाह्यान ने अपने यात्रा विवरण में सम्राट का नाम उल्लिखित नहीं किया है।

कालिदास की रचनाएँ

नाटक ग्रन्थ

- रघुवंशम्
- ऋतुसंहारम्
- मेघदूतम्
- कुमारसंभवम्

अन्य ग्रन्थ

- अभिज्ञान शाकुन्तलम्
- मालविकाग्निमित्रम
- विक्रमोर्वशीयम्

- कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल के दौरान नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। इस विश्वविद्यालय में बौद्ध धर्म की महायान शाखा की विशेषतः पढ़ाई होती थी। इस विश्वविद्यालय को 'ऑक्सफोर्ड ऑफ महायान बुद्धा' भी कहा जाता था।
- नालन्दा विश्वविद्यालय को मोहम्मद गोरी के एक सेनापति बख्तियार खिलजी ने नष्ट कर दिया था।
- नालंदा विश्वविद्यालय की यात्रा ह्वेनसांग ने भी की थी।
- स्कंदगुप्त के भितरी अभिलेख (गाजीपुर, उत्तर प्रदेश से प्राप्त) से पता चलता है कि उसके शासन के अंतिम दिनों में पुष्यमित्र नामक जाति का गुप्त साम्राज्य पर हमला हुआ था। इस युद्ध में आक्रमणकारी परास्त हुये, लेकिन इस विजय की सूचना मिलने से पूर्व ही सम्राट कुमारगुप्त प्रथम का स्वर्गवास हो चुका था।
- कुमारगुप्त प्रथम ने भी अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया, क्योंकि उसके सिक्कों पर यज्ञयूप में बंधे हुए घोड़े की आकृति दिखाई पड़ती है।
- करमदण्डा लेख के अनुसार अवध प्रदेश का राज्यपाल पृथ्वीषेण शैव मतानुयायी था।
- गढ़वा लेख में उसे 'परम भागवत' कहा गया है।
- उसने भितरी नामक स्थान पर भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित कराई।
- प्रशासनिक सुविधा के लिये स्कंदगुप्त ने अपनी राजधानी अयोध्या में स्थानांतरित की।
- जूनागढ़ लेख में हूणों को मलेच्छ कहा गया है।
- स्कंदगुप्त के इन्दौर लेख में सूर्य पूजा का उल्लेख है।
- बर्बर हूणों के विरुद्ध अपनी सफलता से गौरवान्वित होकर स्कंदगुप्त ने क्रमादित्य की उपाधि धारण की थी।

विदेशी यात्री व उनकी रचनाएँ

- फाह्यान—Fu-Ko-Ki
- वांग-ह्वेन—FA-UWAN-CHOLIN
- ह्वेनसांग—Si-U-Ki

- स्कंदगुप्त गुप्त वंश का अंतिम महान शासक था।
- स्कंदगुप्त के भितरी अभिलेख (गाजीपुर, उत्तर प्रदेश) में जिन शत्रुओं का उल्लेख हुआ है, वे बाह्य शत्रु थे।
- स्कंदगुप्त के बाद बुधगुप्त तक गुप्त साम्राज्य की एकता कायम रही। लेकिन बुधगुप्त के बाद इसका उत्तरोत्तर ह्रास होता रहा।
- विष्णु गुप्त गुप्त वंश का अंतिम शासक था। उसके बाद संभवतः 550 ई. में गुप्त साम्राज्य का विलोप हो गया।
- हूणों का प्रथम महत्त्वपूर्ण राजा तोरमाण था, जिसने उत्तरी भारत पर शासन किया था।
- गुप्त काल में नये विश्वास, उनके सम्बन्ध का नया जीवन्त रोमांचक-लोमहर्षक साहित्य इस नवयुग की देन थे। गुप्तकाल में त्रिमूर्ति के अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पूजा प्रारंभ हुई। (ब्रह्मा- सर्जन करने वाले, विष्णु- पालन करने वाले तथा महेश- संहार करने वाले)।

विष्णु के दस अवतार

1. मत्स्य	2. कूर्म
3. वराह	4. नरसिंह
5. वामन	6. परशुराम
7. राम	8. बलराम
9. बुद्ध	10. कल्कि

- गुप्तकाल में हिन्दू धर्म के अन्तर्गत ब्राह्मण धर्म के लिये पुनरुत्थान का काल माना जाता है।
- गुप्त शासक वैष्णव धर्मावलंबी थे।
- इस समय भक्ति सिद्धांत को प्रोत्साहन मिला।
- गुप्त काल में शैव धर्म के साथ-साथ बौद्ध धर्म का भी पुनरुत्थान हुआ।
- कलयुग की कल्पना विष्णु के कल्कि अवतार के आगमन से संबंधित है।
- इस काल में संस्कृत भाषा को बल मिला।
- कालिदास की रचना विक्रमोर्वशीयम में उर्वशी व पुरूरवा की प्रणय कथा का वर्णन है।
- सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में अभिज्ञानशाकुन्तलम सर्वोत्कृष्ट नाटक है।
- इस काल के बौद्ध दार्शनिक थे—आर्यदेव, असंग, वसुबन्धु, मैत्रेय व दिङ्गनाथ।
- मुद्राराक्षस (विशाखदत्त की रचना) में चाणक्य की योजनाओं का वर्णन है।

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

- कामन्दक का नीतिसार व वात्स्यायन का कामसूत्र इसी काल में लिखा गया।

ग्रन्थ व उसके रचनाकार		
विक्रमांकदेव चरित	:	बिल्हण
मुद्राराक्षस	:	विशाखदत्त
गौडवाहो	:	वाक्पति
नवसाहसांक चरित	:	पदमगुप्त
अमरकोश	:	अमर सिंह

- गुप्तकालीन अभिलेखों से ही सर्वप्रथम कायस्थ का उल्लेख मिलता है।

विभिन्न दर्शन व प्रतिपादक		
न्याय दर्शन	—	गौतम
वैशेषिक दर्शन	—	कणाद
सांख्य दर्शन (सबसे प्राचीन)	—	कपिल
योग दर्शन	—	पतंजलि
लोकमत (चार्वाक)	—	चार्वाक

- गुप्तयुगीन वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरण मन्दिर हैं। गुप्तकाल में जो मन्दिर प्रारंभिक समय में बने उनकी छतें सपाट हैं, लेकिन बाद में शिखर युक्त मन्दिरों का निर्माण भी होने लगा। शिखरयुक्त मन्दिर का पहला उदाहरण देवगढ़ (झांसी) का दशावतार मन्दिर है। दशावतार मन्दिर वैष्णव धर्म का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। गुप्तकालीन मन्दिरों में यह सर्वाधिक खूबसूरत है।
- गंगा और यमुना की मूर्ति गुप्तकाल की ही देन है।
- गुप्तकालीन अन्य महत्त्वपूर्ण मन्दिर हैं- नागोद राज्य में अवस्थित भूमरा का शिव मंदिर, तिगवा (जबलपुर) का विष्णु मंदिर, नचना कुठार का पार्वती मंदिर, सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर, विदिशा के निकट उदयगिरि का विष्णु मंदिर आदि।
- कला और साहित्य की दृष्टि से गुप्त काल को भारतीय इतिहास का क्लासिकल युग और स्वर्ण युग कहा जाता है।
- प्राचीन भारतीय इतिहास में मंदिरों का निर्माण सर्वप्रथम गुप्त काल से ही प्रारंभ हुआ।
- गुप्त काल अपनी चित्रकला के लिये प्रसिद्ध है। गुफा चित्रकलाओं में अजंता व बाघ की गुफाएं महत्त्वपूर्ण हैं, जो बौद्ध धर्म से संबंधित है।
- **अजन्ता की गुफाएं** : अजन्ता महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित है। यहां पर कुल 29 गुफाओं का निर्माण किया गया है, जिनमें गुफा संख्या 16, 17 और 19 का सम्बन्ध गुप्त काल से है।
- गुफा संख्या-16 में मरणासन्न राजकुमारी का चित्र बना है।
- गुफा संख्या-17 में जातक कथाओं (बुद्ध के जन्म से पूर्व की कथाओं) का उल्लेख है।
- **बाघ की गुफाएँ** : बाघ मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित है। यहां कुल 9 गुफाओं के होने का प्रमाण मिला है। यहां की समस्त गुफाएं गुप्त काल की मानी जाती हैं। इन गुफाओं के चित्रों के निर्माण में समरूपता दिखाई पड़ती है। अजंता की गुफाएं जहां धार्मिक और अभिजात वर्गीय हैं, वहीं बाघ की गुफाएं धर्मनिरपेक्ष व लौकिक हैं।
- विज्ञान के क्षेत्र में शून्य का सिद्धांत तथा दशमलव प्रणाली का विकास गुप्त काल में ही हुआ।
- गुप्तकालीन मूर्तिकारों ने मूर्तियों को बनाने में मोटे उत्तरीय वस्त्रों का प्रदर्शन किया है।
- व्यवसाय अथवा उद्योग का संचालन श्रेणियां करती थीं। श्रेणी एक ही प्रकार के व्यवसाय अथवा शिल्प का अनुसरण करने वाले लोगों की समिति होती थी।
- विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की रचना की जिसका विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है।
- जैन आचार्य सिद्धसेन ने न्याय दर्शन पर न्यायावतार की रचना की।
- विष्णु का अगला अवतार होना है, जो कल्कि अवतार है। वह सफेद घोड़े पर सवार होकर हाथों में नंगी तलवार लिये आयेंगे व सारी दुनिया के लोगों को मोक्ष दिलायेंगे।
- विष्णु के 10 अवतारों में नौवां अवतार बुद्ध माने जाते हैं।
- राजशेखर की रचना काव्यमीमांसा है।
- शकों पर विजय के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी राजधानी उज्जैन को बनायी।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर एवं तथ्य

- भारत का नेपोलियन किसे कहा जाता है? —**समुद्रगुप्त**
- प्राचीन भारत के किस वंश का शासनकाल भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है? —**गुप्त वंश**
- गुप्त युग में भूमि राजस्व की दर थी—**उपज का छठा भाग**
- इलाहाबाद का अशोक स्तंभ किस शासक के बारे में सूचना प्रदान करता है? —**समुद्रगुप्त**
- गुप्तकाल में उत्तर भारत का एक महत्त्वपूर्ण पत्तन था —**ताम्रलिप्ति (तामलूक-पश्चिम बंगाल)**
- इलाहाबाद स्तंभ में किसकी उपलब्धियां उत्कीर्ण हैं? —**समुद्रगुप्त**
- पहला ज्ञात गुप्त शासक था —**श्री गुप्त**
- गुप्त शासकों द्वारा जारी चांदी के सिक्के कहलाते थे —**रूपक**
- प्राचीन भारत में व्यापारियों का निगम था —**मणिग्राम**
- गुप्तकाल में अपनी आयुर्विज्ञान रचना के लिए जाना जाता है — **सुश्रुत संहिता** (200 BC)
- प्रयाग प्रशस्ति किसके सैन्य अभियान के बारे में जानकारी देता है? —**समुद्रगुप्त**
- अभिज्ञान शाकुंतलम के लेखक हैं —**कालिदास** (कालिदास की अन्य कृतिया हैं- रघुवंश, कुमारसम्भव, विक्रमोर्वशीयम, मालविकाग्निमित्रम, मेघदूत, ऋतुसंहार)
- किसके शासनकाल में हूणों ने भारत पर आक्रमण किया? —**स्कंदगुप्त**
- गुप्त काल का कौन सा शासक 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता है? —**समुद्रगुप्त**

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

9. गुप्तोत्तर काल

(चालुक्य, राष्ट्रकूट, वाकाटक, पल्लव, चोल एवं हर्ष)

गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ-साथ अनेक नए राजवंशों का उदय प्रारंभ हुआ। वादामी (वातापी) के उत्कर्ष का काल छठी शताब्दी ई. के मध्य से लेकर 8वीं शताब्दी के मध्य तक रहा। इन चालुक्य नरेशों को पूर्व कालीन पश्चिमी चालुक्य भी कहा जाता है। राष्ट्रकूटों के अभिलेख में उनका मूल निवास स्थान लट्टलूर (आधुनिक लाटूर-बीदर के समीप) था, उन्होंने एलिचपुर में राज्य स्थापित किया था। कल्याणी के चालुक्य वंश की स्वतंत्रता का संस्थापक तैलप द्वितीय था, इस राजवंश को प्रभुत्व राष्ट्रकूटों के पतन के फलस्वरूप प्राप्त हुआ था। दक्षिणपंथ में राज्य स्थापित करने वाला वाकाटक वंश सर्वाधिक सम्मानित व सुसंस्कृत राजवंश के रूप में भारतीय इतिहास में चर्चित है। पल्लव राजवंश का संस्थापक सिंह विष्णु था। चोलों का प्रारंभिक इतिहास संगम युग (तीसरी शताब्दी ई. पू.) से प्रारंभ होता है किन्तु चोल साम्राज्य का राजनीतिक उत्कर्ष नवीं शताब्दी ई. में हुआ था। चोल साम्राज्य की स्थापना विजयालय (850-880 ई.) ने की थी। हर्ष से पूर्व वर्धन वंश (पुष्यभूति) की राजधानी थानेश्वर थी। परन्तु, हर्ष ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाई थी। हर्ष के समय में कन्नौज का राजनीतिक उत्कर्ष व राजनीतिक केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठापित होना उत्तर भारत में सामंत युग के आगमन का प्रतीक था।

पिछले 15 वर्षों के SSC के प्रश्न पत्रों में ''गुप्तोत्तर काल''

- चीनी यात्री ह्वेनसांग किसके शासनकाल में भारत भ्रमण किया था? **—हर्षवर्धन**
  (सीमा सुरक्षा बल (सब-इंस्पेक्टर्स) परीक्षा, 1997)
- भारत के किस शासक ने जावा और सुमात्रा पर विजय प्राप्त की थी? **—राजेन्द्र चोल**
  (सीमा सुरक्षा बल (सब-इंस्पेक्टर्स) परीक्षा, 1997)
- बाणभट्ट किस सम्राट के राज दरबारी थे? **—हर्षवर्धन**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- उत्तर-गुप्त युग में कौन सा विश्वविद्यालय काफी प्रसिद्ध हो गया था? **—नालंदा विश्वविद्यालय**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- प्रथम भारतीय शासक कौन था, जिसने अरब सागर में भारतीय नौसेना की सर्वोच्चता स्थापित की? **—राजराज-I**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- चोल राजाओं ने किस धर्म का संरक्षण प्राप्त किया? **—शैव धर्म**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- यादव सम्राटों की राजधानी कहां थी? **—देवगिरी**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 1999)
- तमिलनाडु में महाबलीपुरम मंदिर किसके शासनकाल में बनाया गया? **—पल्लव**
  (लोअर डिवीजन क्लर्क (L.D.C) परीक्षा, 1998)
- पांड्य शासकों की राजधानी कहां थी? **—मदुरै**
  (स्टेनोग्राफर (ग्रेड-डी) परीक्षा, 1999)
- विरुपाक्ष मंदिर का निर्माण किसने किया था? **—चालुक्य**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- चालुक्यों ने अपना साम्राज्य कहां स्थापित किया था? **—मालवा**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- एलोरा में सुविख्यात कैलाश शिव-मंदिर का निर्माण किस राष्ट्रकूट शासक ने करवाया था? **—कृष्ण-I**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- पुहार नगर की नींव किस चोल शासक ने रखी थी? **—राजेंद्र चोल**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2000)
- हर्षवर्धन के समय में कौन सा चीनी तीर्थयात्री भारत आया था? **—ह्वेनसांग**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय को किसने पराजित किया था? **—नरसिंह वर्मन प्रथम**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- राष्ट्रकूट साम्राज्य का प्रवर्तक कौन था? **—दन्तिदुर्ग**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- किन शासकों के राज्यकाल में अजंता और एलोरा की गुफा चित्रकला विकसित हुई थी? **—राष्ट्रकूट**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- पांड्य साम्राज्य की राजधानी कहां थी? **—मदुरै**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- चोल राजाओं की राजधानी कहां थी? **—तंजौर**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2001)
- चालुक्य वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक कौन था? **—पुलकेशिन-II**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- अंतिम बौद्ध राजा कौन था जो संस्कृत का महान विद्वान और लेखक था? **—हर्षवर्धन**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- तंजौर में वृहदेश्वर मंदिर का निर्माण किसने किया था? **—राजराज चोल**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- महाबलिपुरम की स्थापना किसने की थी?**—पल्लव शासक**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2002)
- कौन से शासकों ने एलोरा मंदिरों का निर्माण कराया था? **—राष्ट्रकूट**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2003)
- तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर को जो हमारे देश में सबसे बड़ा है, किसने बनवाया? **—राजराज-I**
  (सहायक निरीक्षक नियंत्रण परीक्षा,, 2003)
- महाबलिपुरम के रथों का निर्माण किसके शासनकाल में हुआ? **—पल्लवों के**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2005)
- किस चोल शासक ने श्रीलंका के उत्तरी भाग को जीतकर अपने साम्राज्य का एक प्रांत बनाया था? **—राजराज-I**
  (संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)
- त्याग समुद्र की पदवी किसने धारण किया था? **—चोल राजा राजेंद्र**
  (संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2007)
- पल्लवों की राजधानी का नाम क्या था? **—कांची**
  (सेक्शन ऑफीसर्स (कामर्शियल ऑडिट) परीक्षा, 2006)
- कहा जाता है कि सेंट थॉमस ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com

भारत आए थे। ये किसके शासनकाल के दौरान आए थे? —**पार्थियन**

(सेक्शन ऑफीसर्स (ऑडिट) परीक्षा, 2008)

- महाबलीपुरम में रथ मंदिरों का निर्माण किस पल्लव शासक के शासनकाल में हुआ था? —**नरसिंह वर्मन प्रथम**

(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)

- किस चोल राजा ने लंका (सिंहल) को पहले जीता था? —**राजराज-I**

(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)

- ऐलोरा में प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण किस राजा ने किया था? —**सआदत खां**

(संयुक्त मैट्रिक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2008)

- हर्षवर्धन को किसने पराजित किया था? —**पुलकेशिन-I**

(संयुक्त स्नातक स्तर (P.T.) परीक्षा, 2010)

- रत्नावली किसकी रचना है —**हर्षवर्धन की**

(सबऑर्डिनेट एकाउंट सर्विस अप्रैंटिस परीक्षा, 2010)

- हर्षवर्द्धन के राजकवि कौन थे? —**बाणभट्ट**

(संयुक्त हायर सेकेण्डरी स्तर परीक्षा, 2011)

- ह्वेनसांग किसके शासनकाल के दौरान भारत आया था? —**हर्षवर्धन**

(स्नातक स्तर (टियर-I) परीक्षा, 2011)

- चालुक्य शासक पुलकेशिन ने हर्षवर्धन को किस नदी के तट पर हराया था? —**नर्मदा**

(मल्टी टास्किंग स्टाफ (MTS) परीक्षा, 2013)

- पुलकेशिन द्वितीय किसका महानतम शासक था? —**बदौरी के चालुक्य**

(संयुक्त स्थातक स्तरीय प्रा. परीक्षा, 2013)

- रविकीर्ति, जो एक जैन थे और जिन्होंने एहोल प्रशस्ति की रचना की थी, को किसका संरक्षण प्राप्त था? —**पुलकेशिन II (द्वितीय)**

(संयुक्त हॉयर सेकेंडरी (10+2) परीक्षा, 2014)

- राष्ट्रकूटों का सर्वाधिक चिरस्थायी योगदान है? —**कैलाश मंदिर**

(संयुक्त हॉयर सेकेंडरी (10+2) परीक्षा, 2015)

विशिष्ट तथ्य ''गुप्तोत्तर काल''

- छठीं शताब्दी के मध्य गुप्त साम्राज्य पूर्णतः विभक्त हो गया। गुप्त साम्राज्य के पतनोपरांत स्थानीय शासकों ने अपनी-अपनी स्वतंत्रता घोषित करनी शुरू कर दी। हर्ष के उदय के पूर्व उत्तर व पश्चिमी भारत में निम्नलिखित प्रमुख शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ :
  —वल्लभी में मैत्रक वंश ने सत्ता संभाली।
  —पंजाब में हूणों का शासन था।
  —कन्नौज में मौखरि वंश ने सत्ता स्थापित की।
  —मालवा में यशोवर्मन का शासन था।
- दक्षिण भारत में इस समय पल्लवों का शासन रहा। इसके साथ ही दक्षिण भारत में तीन शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ—बादामी के चालुक्य, कांची के पल्लव तथा मदुरा के पाण्ड्य।
- हूण मध्य एशियाई बर्बर जाति थी।
- तोरमाण के बाद उसका पुत्र मिहिरकुल शासक बना। आरंभ में इसकी राजधानी गांधार में थी।
- मिहिरकुल के ग्वालियर लेख में उसे पृथ्वी का स्वामी कहा गया है।
- मिहिरकुल शैव मतानुयायी था तथा बौद्धों का घोर शत्रु था। कल्हण अपनी रचना राजतरंगिणी में लिखता है कि उसने श्रीनगर में शिव मंदिर बनवाया था। वह बौद्धों पर बहुत जुल्म करता था।

मालवा में यशोधर्मन का शासन था।

- यशोधर्मन ने नालंदा में एक बड़ा विहार बनवाया था।
- मंदसौर प्रशस्ति में उसे जननेंद्र कहा गया है।
- यशोधर्मन के उत्थान व पतन का काल 528-543 ई. के बीच (संभवतः) रहा होगा।

कन्नौज में मौखरि वंश का शासन था।

- मालवा के शासक यशोधर्मन के बाद आर्यावर्त पर मौखरि वंश का शासन स्थापित हुआ। इनकी राजधानी कन्नौज थी।
- कन्नौज के मौखरियों के पहले शासक, हरिवर्मा था उसके बाद उसका पुत्र आदित्य वर्मा शासक बना, परन्तु मौखरियों को सामन्त स्थिति (ये पूर्ववर्ती शासक गुप्तों के सामंत थे) से स्वतंत्र स्थिति में लाने वाला शासक ईशान वर्मा था।
- ईशान वर्मा के विजयों का उल्लेख हरहा अभिलेख में है।
- ईशान वर्मा वैदिक मत का पोषक था।
- ईशान वर्मा के बाद के उल्लेखनीय व महत्त्वपूर्ण शासकों में ग्रहवर्मा था, जिसका विवाह थानेश्वर नरेश प्रभाकरवर्द्धन की कन्या राज्यश्री के साथ हुआ था।

दक्षिण भारत

बादामी (वातापी) के चालुक्य

- बादामी के चालुक्यों का उत्कर्ष पुलकेशिन प्रथम के समय में हुआ। पुलकेशिन प्रथम ने बीजापुर के निकट वातापी या बादामी को अपनी राजधानी बनाई थी, इसीलिये इस वंश को बादामी के चालुक्य भी कहते हैं।
- पुलकेशिन-I के बाद कीर्तिवर्मन शासक बना। इसे वातापी का प्रथम निर्माता कहा गया है। कीर्तिवर्मन ने गोवा पर अधिकार किया था।
- कीर्तिवर्मन के बाद उसका बेटा पुलकेशिन-II शासक बना। इसने हर्ष के विजय अभियान को संभवतः नर्मदा के तट पर रोका था।
- पुलकेशिन-II के समय में ही पल्लव-चालुक्य संघर्ष की शुरुआत होती है। पुलकेशिन-II के समय में ही ह्वेनसांग महाराष्ट्र के क्षेत्र में गया था।
- पुलकेशिन-II ने ऐहोल अभिलेख लिखवाया था। इस अभिलेख की भाषा संस्कृत व लिपि ब्राह्मी है।
  (ऐहोल प्रशस्ति लेखक रविकीर्ति जैन मतानुयायी था)
- परवर्ती शासकों के काल में शक्ति का धीरे-धीरे ह्रास होता रहा। अन्ततः राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग ने 757 ई. में इस वंश की सत्ता को समाप्त कर अपनी सत्ता की स्थापना की।
- चालुक्यों ने वास्तुकला के क्षेत्र में दक्कनी या बेसर शैली (द्रविड़ शैली + नागर शैली का मिश्रण) की शुरुआत की।
- चालुक्यों के काल में ऐहोल, बादामी व पट्टदकल में अनेक खूबसूरत मंदिरों का निर्माण हुआ।
- मंदिरों में मेगुति जैन का मंदिर व लाढ़ का सूर्य मंदिर प्रसिद्ध है।
- एहोल को 'मंदिरों का शहर' कहा जाता है। यहां कुल 70 मंदिर के साक्ष्य मिलते हैं।

पल्लव

- पल्लव वंश का उत्कर्ष महेन्द्र वर्मन प्रथम के शासनारोहण के समय शुरू हुआ। महेन्द्र वर्मन ने 'मत्तविलास प्रहसन' की रचना की और वास्तुकला के क्षेत्र में उसने मण्डप शैली को प्रारम्भ

For More Book Download Click Here - http://GKTrickHindi.com